ओ३म्

ऋषि दयानन्द

के

पत्र और विज्ञापन

द्वितीय भाग

सम्पादक

भगवद्दत्त ।

ऋषि दयानन्द

के

पत्र और विज्ञापन ।

द्वितीय भाग ।

सम्पादक—

पण्डित भगवद्दत्तजी

प्रकाशक—

देवदत्त बी० ए० चंदन बाड़ी चंगड़ मौहल्ला, लाहौर ।

पञ्जाब आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, चौक मत्ती लाहौर में छपा ।

दयानन्दाब्द ३७

प्रथमवार	सम्वत् १९७६	मूल्य
१०००	सन् १९१९	।≡)

॥ ओ३म् ॥

कुछ पत्रों के सम्बन्ध में ।

ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन प्रथम भाग में की प्रतिज्ञानुसार यह दूसरा भाग अब जनता के सामने धरा जाता है। इस में भी कई असन्तोपयोगी पत्र दिये गये हैं। कुछ पत्रों की अङ्गरेज़ी बड़ी अशुद्ध थी। वह मूलवत् रहने दी गई है। प्रतीत होता है उन दिनों ऋषि के समीप कोई अतीव साधारण अङ्गरेज़ी पढ़ा लिखा लेखक था। इन पत्रों का मैंने भाषानुवाद कर दिया है।

इस भाग में तीन लेख बड़े महत्व के हैं। एक तो वेदभाष्य का विज्ञापन सं० १३७, दूसरा उचित वक्ता की समीक्षा सं० १३८ और तीसरा नियोग का मसव्विदा सं० १३९। उचित वक्ता का लेख मैंने क्यों यहां छापा है? इस का एक तो स्पष्ट उत्तर यही है कि पत्र २७ भाग प्रथमानुसार श्री महाराज ने स्वयं लिखा है "और मैं भी उस प्रश्नोत्तरी के विरुद्ध विषय के उत्तर में सम्मत हूं"। अर्थात् इस लेख से वह सहमत थे। मेरे विचारानुसार तो यह उत्तर उन्हों ने स्वयं लिखवाया था। इस बात को किसी अगले भाग में जब कि समस्त पत्रों की एक विस्तृत भूमिका लिखी जायगी मैं प्रमाणित करूंगा। अब रहा नियोग का मसव्विदा पत्र १११ में श्री स्वामी जी श्री मूलराज जी एम. ए. को इसी के विषय में लिख रहे हैं। इस का मूल श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को मेरठ से मिला था। उन्हों ने इसे "प्रकाश" में छपवा दिया था। वहीं से मैंने ले लिया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मुझे कहा था कि इस के छपने में अशुद्धियां रह गई थीं, सो आशा है वह आगे कभी दूर हो जायंगी।

नवीन पत्रों के संग्रह करने का यत्न कर रहा हूं। पर्य्याप्त संख्या में प्राप्त कर लेने पर उन्हें भी प्रकाशित कर दूंगा। आशा है परमात्मा की कृपा से लोग ऋषि के शुद्ध हृदय का दर्शन इन पत्रों से भले प्रकार करेंगे।

शीघ्रता के कारण छपने में कोई ५, ७ साधारण अशुद्धियां रह गई हैं, पाठक उन्हें स्वयं सुधार लें। हां पृ० २१ पर पं० ८ में "कलम्" के स्थान में "फलम्" पढ़ें।

स्थान लाहौर
मार्गशीर्ष, शुक्ला ६ शुक्र
दयानन्दाब्द, ३७

भगवद्दत्त

(१)

(८३)

Saharanpur N. W. P.
May 2nd 1879

I hereby authorize Henry S. Olcott, to caste my vote upon all questions relating to the Theosophical Society which may be brought before the General Council for action in my abscence; and, generally, to use my authority as Supreme Chief of the Eastern and Western Theosophists of the Arya Samaj according to the general views which I have personally expressed to him. *

(दयानन्द सरस्वती)

सहारनपुर, पश्चिमोत्तर प्रदेश
२ मई, १८७९

मैं इस लेख द्वारा हैनरी ऐस आल्काट को थ्यासोफिकल सोसायटी सम्बन्धी सब प्रश्नों पर जो मेरी अनुपस्थिति में साधारण सभा के सम्मुख कार्यार्थ लाये जायें, अपनी ओर से सम्मति देने का अधिकार देता हूं। और वे उन सामान्य विचारानुसार जो मैंने उन्हें स्वयं जताए हैं, आर्य्यसमाज के

---

* इस पत्र की प्रतिकृति थ्यासोफिस्ट जुलाई १८८२ के परिशिष्ट में छपी है। उसके नीचे एक नोट है कि म० मूलजी ठाकुरशी ने कहा है कि उन्होंने स्वामीजी को इस पत्र का अनुवाद सुनाया था। तब उनके सम्मुख ही स्वामी ने अपने हस्ताक्षर कर दिये थे।

पूर्वीय और पश्चिमीय थ्यासोफिस्टों के प्रधानाध्यक्ष के रूप में साधारणतया मेरा अधिकार वर्त्त सकते हैं।

[दयानन्द सरस्वती]

---

(८४)

(२)

श्राद्ध (ओरिजन्) अर्थात् असली है। श्राद्ध शब्द के अर्थ श्रद्धा के हैं। पुत्र को माता पिता आदि की सेवा श्रद्धा से उनके जीवन पर्यन्त करना अवश्य है। परन्तु जो लोग मरे हुए माता पिता का श्राद्ध करते हैं वह असली नहीं है क्योंकि जीते माता पिता आदि की सेवा श्रद्धा से करनी श्राद्ध कहाता है। मृतक के लिये पिण्ड देना व्यर्थ है क्योंकि मरे हुए को पिण्ड देने से कुछ लाभ नहीं होता। *

दयानन्द सरस्वती।

---

(८५)

(१)

॥ ओ३म् ॥

विशिष्ट विज्ञापन।

(सब सज्जनों को)

विदित हो कि आर्य्य समाज और थियोसोफीकल सोसायटी का जैसा सम्बन्ध है वैसा प्रकाशित कर देना मुझको अत्यन्त उचित इसलिये हुआ कि इस विषय में मुझ वा अन्य से बहुत मनुष्य पूछने लगे और इस का ठीक मतलब न जान उलटा निश्चय कर कहने भी लगे कि आर्य्य समाज थियोसोफीकल सोसायटी की शाखा है। इत्यादि भ्रम की निवृत्ति कर देनी आवश्यक हुई। जो ऐसी २ बातों के प्रसिद्ध रीति से उत्तर न दिये जायं तो बहुत मनुष्यों को अत्यन्त भ्रम बढ़ कर विपरीत फल होने का संभव हो जाय। इसलिये सब आर्य्य और अनार्य्यों को इसका सत्य २ वृत्तान्त विदित करता हूं कि जिससे सत्य दृढता और भ्रम का उच्छेद हो के सब को आनन्द ही सदा बढ़ता जाय॥

---

* किसी पुरुष ने सम्पादक थ्यासोफिस्ट को ८ फर्वरी १८८० को एक पत्र लिखा। उसमें उसने श्राद्ध विषय में उनकी और विशेष कर स्वामी दयानन्द की सम्मति मांगी थी। वह मूल और स्वामी की ओर से उसका पूर्वोक्त उत्तर थ्यासोफिस्ट मार्च १, १८८० में छपा है।

बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि जो किसी समय मुम्बई आर्य्य समाज के प्रधान थे उनसे न्यूयार्क नगर एमिरिका की थियोसोफिकल सोसायटी के प्रधान एच्० एस० करनेल ओलकाट साहब बहादुर और एच० पी० मेडम ब्लेवस्टिकी आदि से कुछ दिन आगे पत्र द्वारा एक दूसरी सभा के नियम आदि जानके सम्वत् १९३५ चैत्र में मेरे पास भी पत्र न्यूयार्क से आया था कि हमको भी आर्य्यावर्त्तीय प्राचीन वेदोक्त धर्मोपदेश विद्या दान कीजिये। मैंने उसके उत्तर में अत्यन्त प्रसन्नता से लिखा कि मुझ से जितना उपदेश बन सकेगा यथावत् करूंगा। इसके पश्चात् उन्होंने एक डिपलोमा मेरे पास इसलिये भेजा कि जो थियोसोफिकल सोसायटी आर्य्यावर्त्तीय आर्य्य समाज की शाखा करने के विचार का निमित्त था जब वह डिप्लोमा यहां से फिर वहां गया सभा करके सभासदों को सुनाया, तब बहुत से सभासदों ने इस बात में प्रसन्न होकर इसका स्वीकार किया, और बहुतों ने कहा कि हम ठीक २ जान के पश्चात् इस बात का स्वीकार करेंगे ॥

जब वहां ऐसा विरुद्ध पक्ष हुआ तब फिर मेरे पास वहां से पत्र आया कि अब हम क्या करें ? इस पर मैंने पत्र लिखा कि यहां आर्य्यावर्त्त में अब तक भी बहुत मनुष्य आर्य्य समाज के नियमों को स्वीकार नहीं करते, थोड़े से करते हैं, तो वहां वैसी बात के होने में क्या आश्चर्य्य है। इसलिये जो मनुष्य अपनी प्रसन्नता से आर्य्य समाज के नियमों को मानें वे वेदमतानुयायी और जो न मानें वे केवल सोसायटी के सभासद रहें, उनका अलग हो जाना अच्छा नहीं। इत्यादि विषय लिखके मैंने बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के पास पत्र भेजा और उनको लिखा कि इस पत्र की अंगरेज़ी करके शीघ्र वहां भेज दीजिये। परन्तु उन्होंने वह पत्र न्यूयार्क में न भेजा, जब समय पर पत्र का उत्तर वहां न पहुंचा तब जैसा मैंने उत्तर लिखा था वैसा ही वहां किया गया, कि जो वेदों को पवित्र सनातन ईश्वरोक्त मानें वे वैदिकी शाखा में गिने जायं, और वह आर्य्य समाज की शाखा रहे; परन्तु वह सोसायटी की भी शाखा रही क्योंकि वह सोसायटी की भी एक अंगवत् है। अर्थात् न आर्य्य समाज थियोसोफिकल सोसायटी की शाखा और न थियोसोफिकल सोसायटी आर्य्य समाज की शाखा है, किन्तु जो वैदिकी शाखा थियोसोफिकल में है जिसमें एच्० एस० करनेल

ओलकाट साहब बहादुर और एच्० पी० मेडम ब्लेवस्टकी आदि सभासद हैं यह आर्य्य समाज और सोसायटी की शाखा है। ऐसा सब सज्जनों को जानना उचित है इससे विपरीत समझना किसी को योग्य नहीं। देखिये यह बड़े आश्चर्य्य की बात हुई है कि जिस समय मुम्बई में आर्य्य समाज का स्थापन हुआ उसी समय न्यूयार्क में थियोसोफिकल सोसायटी का आरम्भ हुआ। जैसे आर्य्य समाज के [उद्देश्य] नियम लिखके माने गये वैसे ही [उद्देश्य] नियम थियोसोफिकल सोसायटी के निश्चित हुए, और जैसा उत्तर मैंने तीसरे पत्र में लिख के वैदिकी शाखा और सोसायटी के लिये भेजा था उसके पहुंचने के पूर्व ही न्यूयार्क में वैसा ही कार्य किया गया। क्या ये सब कार्य्य ईश्वरीय नियम के अनुसार नहीं हैं? क्या ऐसे कार्य्य अल्पज्ञ जीव के सामर्थ्य से बाहर नहीं हैं? कि जैसे कार्य्य पृथिवी के ऊपर जिस समय में हों वैसे ही भूमि के तले [पाताल] अर्थात् एमरिका में उसी समय हो जांय। ये बड़ी अद्भुत बातें जिसकी सत्ता से हुई हैं अर्थात् पांच हज़ार वर्षों के पश्चात् आर्य्यावर्त्तीय धार्मिक मनुष्यों और [पातालस्थ] अर्थात् एमरिका के निवासी मनुष्यों का वेदोक्त सनातन सुपरीक्षित धर्म्य व्यवहारों में बान्धवीय प्रेम प्रकट किया है, उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा को प्रार्थना पुरस्सर कोटि कोटि धन्यवाद देता हूं; कि हे सर्वशक्तिमन्! सर्वव्यापक! दयालो! न्यायकारिन्! परमात्मन् जैसा आप ने कृपा से यह कृत्य किया है वैसे भूगोलस्थ सब धर्मात्मा विद्वान् मनुष्यों को उसी वेदोक्त सत्य मार्ग में सुस्थिर शीघ्र कीजिये। कि जिससे परस्पर विरोध छूट, मित्रता होके सब मनुष्य एक दूसरे की हानि करने से पृथक् होके अन्योन्य का उपकार सदा किया करें। वैसे ही हे प्रियवर मनुष्यो आप लोग भी उसी परब्रह्म की प्रार्थना पूर्वक पुरुषार्थ कीजिये, कि जिस से हम सब लोग एक दूसरे को दुःखों से सदा छुड़ाते और आनन्द से युक्त रहें, और दूसरों को भी सर्व सुखों से युक्त करें। हे बन्धुवर्गो जैसा आनन्द मनुष्यों को छः हज़ार वर्षों के पूर्व था वैसा समय हम लोग कब देखेंगे! धन्य हैं वे मनुष्य कि जो जैसा अपना हित चाहते और अहित नहीं चाहते थे और वैसा ही वर्त्तमान सब के साथ सदा करते थे। क्या यह छोटी बात है। इस लिखने में मेरा अभिप्राय यह है कि जो २ बातें

सब मनुष्यों के सामने सत्य हैं, जिनके मिथ्या होने के लिये कोई भी मनुष्य साक्षी न दे सकता है उन २ बातों को धर्म उन से विरुद्ध बातों को अधर्म जान मान के भूगोलस्थ मनुष्यों को धर्म की बातों का ग्रहण करना, और अधर्म की बातों का छोड़ देना, क्या कठिन और असम्भव है ? जिस लिये ऐसा ही वर्तमान छः हज़ार वर्षों से पूर्व था इसी लिये कोई दूसरा मत प्रचरित नहीं होता था, जैसे अज्ञान से आज कल मनुष्य एक २ अपनी २ क़ौम और एक २ अपने २ मज़हब की बढ़ती और अन्य सब की हानि करने में प्रवृत्त हो रहे हैं वैसे वैदिक मत के प्रचार समय में न था; किन्तु सब मनुष्य सब की बढ़ती करने में प्रवर्त्तमान हो कर किसी की हानि करना कभी न चाहते थे, सब को अपने समान समझ दुःखी किसी को न करते, और सब को सुखी किया करते थे; वैसा ही अब भी होना अवश्य चाहिये। क्या जब सब धार्मिक विद्वान् मनुष्य पुरुषार्थ से निःशंकित सत्य बातों में एक सम्मति और मिथ्या बातों में एक विमति कर एक मत किया चाहें तो असम्भव और कठिन है ? कभी नहीं। किन्तु सम्भव और अति सुगम है। जितना अविद्वानों के विरोध और मेल से मनुष्यों को हानि और लाभ नहीं होता, उतने से हज़ार गुणा हानि और लाभ विद्वानों के विरोध और मेल से होता है। इसलिये सब सज्जन विद्वान् मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि शीघ्र विरुद्ध मतों को छोड़ एक अविरुद्ध मत का ग्रहण कर परस्पर आनन्दित हों। यही वेदादि शास्त्र प्राचीन सब ऋषि मुनि और मेरा भी सिद्धान्त और निश्चय है ॥

बुद्धिमानों के सामने अधिक लिखना आवश्यक नहीं क्योंकि वे थोड़े ही लेख में सब कुछ जान लेते हैं ॥ ओ३म् ॥

मिती श्रावण वदी ५, सोमवार, सम्वत् १९३७ ॥

हस्ताक्षर, स्वामी दयानन्द सरस्वती।

ओ३म्

(३) (८६)

श्रीयुत पण्डित गोपालरावजी आनन्दित रहो। विदित हो कि गोरक्षार्थ हस्ताक्षर पत्र के सहित आप का कुशल पत्र पहुंचा। पत्रस्थ समाचार के अवकोलन करने से अत्यन्त हर्ष हुआ। यह आप ने सर्वोपकारक धन्य-

बादाई पुरुषार्थ किया। परमात्मा दिन प्रति ऐसे ही कर्मों के सिद्ध करने में उत्साही करे। आशा है कि आर्य्य भाषा के प्रचारार्थ भी आप स्वपुरुषार्थ की प्रकटता करेंगे—हम उदयपुर पहुंच कर नौलखा बाग़ के राज महलों में ठहरे हैं। एक वार श्रीयुत आर्यकुल दिवाकर श्री महाराणा साहब पधारे। परस्पर प्रेम प्रीति के साथ समागम हुआ। जैसा उनका नाम है वैसे ही गुण भी देखे। इत्यादि द्वितीय श्रावण १२ शनि सम्वत् १९३९। *

(दयानन्द सरस्वती)

---

(१) (८७)

ओ३म्

श्रीयुत माननीयवर शूरवीर महाराजेश्री प्रतापसिंहजी आनन्दित रहो!

यह पत्र बाबा साहब को भी दृष्टि गोचर करा दीजियेगा।

(१) मुझ को इस बात का बहुत शोक होता है कि श्रीमान् योध पुराधीश आलस्य आदि में वर्तमान, आप और बाबा साहब दोनों रोगयुक्त शरीर वाले हैं अब कहिये इस राज का कि जिस में १६००००० सोलह लाख से कुछ ऊपर मनुष्य वसते हैं उनकी रक्षा और कल्याण का बड़ा भार आप लोग उठा रहे हैं सुधार और बिगाड़ भी आप ही तीनों महाशयों पर निर्भर है तथापि आप लोग अपने शरीर का आरोग्य संरक्षण और आयु बढ़ाने के काम पर बहुत कम ध्यान देते हैं यह कितनी बड़ी शोचनीय बात है मैं चाहता हूं कि आप लोग अपनी दिनचर्य्या मुझ से सुन के सुधार लेवें जिस से मारवाड़ तो क्या अपने आर्य्यावर्त देश भर का कल्याण करने में आप लोग प्रसिद्ध होवें आप जैसे योग्य पुरुष जगत् में बहुत कम जन्मते हैं और जन्म के भी बहुत कम चिरंजीवी शतायु होते हैं इस के हुए विना देश का सुधार कभी नहीं होता उत्तम पुरुष जितना अधिक जीवें उतनी ही देश की उन्नति होती है इस पर ध्यान आप लोगों को अवश्य देना चाहिये आगे जैसी आप लोगों की इच्छा हो वैसे कीजिये।

(२) आगे जो यह सुना जाता है कि आगामी सोमवार के दिन यहां के लालजी आदि की मेरे साथ बात चीत होने वाली है उस में आपकी सम्मति है वा नहीं यदि सम्मति है तो सायंकाल के सात बजे से साढ़े आठ

---

* दयानन्द दिग्विजयार्क तृतीय खण्ड पृ० ७९ से उद्धृत।

बजे तक सभा में बराबर उपस्थित होंगे वा नहीं जो आप और बाबा साहब उचित समय सभा में उपस्थित न रहेंगे तो मैं भी इन स्वार्थी देश के बिगाड़ने वाले पुरुषों के साथ वाद करने के लिये उपस्थित न होऊंगा कारण यह कि उन में सभ्यता की रीति बहुत कम देखने में आती है और पक्षपात भी अधिकतर है एक आप को छोड़ कर अन्य पुरुष भी समय पर सभा में निष्पक्षपाती होकर सत्य बोलने वाला अब तक मेरी दृष्टि में नहीं आया है इससे आप का उस सभा में उपस्थित रहना अत्यन्त उचित समझता हूं।

(३) यदि सोमवार को शास्त्रार्थ कराने की इच्छा हो तो कल सायंकाल ७ बजे से साढ़े आठ बजे तक उसके नियम एक दिन पहले बन जाने अवश्य चाहियें कि जिस से दूसरे दिन बराबर शास्त्रार्थ चले इस लिये लालाजी को कल सायंकाल बुलवा लेना चाहिये और आप लोग भी सभा में उपस्थित हों कि सब के सामने पक्षपात रहित नियम नियत लिखित हो जावें।

(४) इस पोप लीला की निवृत्ति करके यहां से अन्यत्र यात्रा करने का मेरा विचार है अनुमान है कि बाबा साहब ने आप से कह भी दिया होगा।

इन उपरि लिखित सब बातों का उत्तर लेख पूर्वक आज सायंकाल तक मेरे पास भिजवा देवें। अलमति विस्तरेण महामान्यवर्य्येषु ॥

मि० आ० व० ३ शनि सं० १९४०

दयानन्द सरस्वती

---

(१) (८८)

बाबू माधोलाल जी आनन्द रहो!

आपका कुशलपत्र तारीख २४वीं गत मास का उचित समय पर हमारे पास पहुंचा विषय लिखा सो प्रगट हुआ। आप के इच्छा के अनुसार कल्ह की तारीख ३१ मार्च को दो छपे हुए आर्य्य समाज के मुख्य दश उद्देश्य अर्थात् नियमों के भेज चुके हैं और आज एक कापी उक्त समाज के उपनियमों की भी भेजते हैं सो निश्चय होता है कि दोनों कापियां नियम और उपनियमों की आप के पास अवश्य पहुंचेंगी। रसीद शीघ्र भेज दीजिये। और इन नियमों को ठीक २ समझ कर वेद की

आज्ञानुसार सब के हित में प्रवृत होना चाहिये विशेष करके अपने आर्य्यावर्त्त देश के सुधारने में अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम भक्ति सब के परस्पर सुख के अर्थ तथा उनके क्लेशों के मेटने में सत्य व्यवहार और उत्कण्ठा के साथ अपने ही शरीर के सुख दुःखों के समान जान कर सर्वदा यत्न और उपाय करना चाहिये। सब के साथ हित करने का ही नाम परमधर्म्म है। इसी प्रकार वेद में बराबर आज्ञा पाई जाती है जिस का हमारे प्राचीन ऋषि मुनि आदि यथावत पालन करते और अपनी संतानों को विद्या और धर्म्म के अनुकूल सत्य उपदेश से अनेक प्रकार के सुखों की वृद्धि अर्थात् उन्नति करते चले आये हैं केवल इसी देश से विद्या और सुख सारे भूगोल में फैला है क्योंकि वेद ईश्वर की सब सत्य विद्याओं का कोश और अनादी है। बाकी सब व्यवहार तथा ईश्वर की उपासना आदि के विषय हमारी पुस्तकों और उपनियम आदि के देखने से समझ लेना उचित है। आपको हिन्दूसतसभा के स्थान में आर्य्य समाज नाम रखना चाहिये क्योंकि आर्य्य नाम हमारा और आर्य्यावर्त्त नाम हमारे देश का सनातन वेदोक्त हैं।

आर्य्य के अर्थ श्रेष्ठ और विद्वान धर्मात्मा के हिन्दू शब्द यवन आदि ईर्शक लोगों का विगाड़ा और बदला हुआ है जिस का अर्थ गुलाम काफर और काला आदमी आदि विचार कर नाम अपनी सभा का आर्य्य समाज दानापुर रखकर वेदोक्त धर्मों पर और सब सभासदों में परस्पर नमस्ते कहना चाहिये। सलाम वा वंदगी नहीं। इति।

ताः १ अप्रैल सन १८७८ ई०

द: दयानन्द सरस्वती

---

(२) (८९)

बाबू माधोलाल जी आनन्द रहो!

पत्र आप का ताः ७ अप्रैल का पास हमारे पहुंचा। विषय मालूम हुआ निचे लिखी हुई पुस्तकें आपके पास भेजी जाती है। इनको क्रमपूर्वक समझ कर रसीद हमारे पास शीघ्र भेज दीजिये लाहौर के पते से—

१—सत्यार्थप्रकाश २॥) १—आर्य्योद्देश्य रत्नमाला —)॥
१—संस्कारविधि १॥=) १—मेलेचांदापुर की उर्दू में —)।

१—आर्य्याभिविनय	॥)	१—प्रश्नोत्तर जलधरे	-)
१—सन्ध्योपासन	।=)		
७—कुल्ल दाम पुस्तक	५≡)।॥		
डाकमहसूल	।-)॥		

महसूल डाक सहित कुल्ल दाम ५॥-)।॥

पांच रुपये नौ आने और नौ पाई हुए। बड़ी प्रसन्नता की बात हुई कि आप अपनी सभा का नाम आर्य्यसमाज रक्खा है। अब आप की दृष्टि देश के सुधार पर होनी चाहिये। अग्रे किमधिकम्। इति। ता० १२ अप्रैल सन् १८७८ ई०। द: दयानन्द सरस्वती

---

(३) (६०)
नं० २१६

बाबू माधवलालजी आनन्द रहो!

विदित हो कि चिट्ठी आप की आई बहुत हर्ष हुआ आप पाणिनी-याष्टाध्यायी भाष्य के ग्राहकों की सूचीपत्र बना कर भेज दीजिये, क्योंकि जो इस में खर्च होगा वह तो आप को ज्ञात ही होगा। १००० ग्राहक जब हो जायंगे तब आरम्भ करेंगे। सब सभासदों को नमस्ते॥

रुड़की जिले सहारनपुर २५ जुला० ७८

दयानन्द सरस्वती

---

(४) (६१)
२७०

बाबू माधोलालजी आनन्द रहो!

विदित हो कि आप को इस बात का विज्ञापन दिया जाता है कि बहुत से मनुष्य हमारे नाम से आप लोगों को लूटते फिरते हैं और कहते हैं कि हमको स्वामीजी ने भेजा है, सो हमने अब तक किसी को व्याख्यान के लिये नियुक्त नहीं कीया और जब नियत करेंगे तो सब समाजों में अपनी मोहर करके चिट्ठी भेज देवेंगे और एक नकल उसी चिट्ठी की मोहर करके उस मनुष्य को दे दी जावेगी॥ कभी ऐसे मनुष्यों

की धोखे में न आना ॥ और ग्राहक अष्टाध्यायी के भेज दो क्योंकि अब तैयार होने लगी है ॥

९ अगस्त
७८

हस्ताक्षर
दयानन्द सरस्वती
रुड़की जि० सहारनपुर

---

(५)　　　　　(९२)
नं० ३०३

बाबू माधोलालजी आनन्द रहो !

विदित हो कि चिट्ठी आप की आई एक नोट १०) के और २८) के टिकट पाय सो आप के लेखानुसार

४. सत्यार्थप्रकाश	१०)
३. पं० महायज्ञविधि	१)॥
१. आर्य्याभिविनय	॥)
	११॥)॥
डाकमहसूल	॥=)

भेजते हैं सो जब आप के पास पहुंच लेवें रसीद भेज दीजिये और आर्य्य-समाज की उन्नति करते रहो ॥

अष्टाध्यायी की वृत्ति बनने का आरम्भ हो गया है।

यहां पर सब प्रकार से कुशल है और हम आनन्द में हैं।

रुड़की जिले सहारनपुर　　　　हस्ताक्षर
१५ अगस्त ७८　　　　दयानन्द सरस्वती

---

(६)　　　　　(९३)
४६५

बाबू माधोलालजी आनन्द रहो !

विदित हो कि पत्र आप का १०।=)॥ के साथ पहुंचा सो रसीद भेजते हैं और मुंबई को लिख दिया है वहां से १०-११ दिन में २ वेद-भाष्यभूमिका आप के पास पहुंचेगी।

हम आज कल मेरठ में हैं यहां से दिल्ली की ओर का विचार है। जब पूर्व को बढ़ेंगे आप को लिख भेजेंगे यहां पर भी व्याख्यान नित्य

होता है आशा है कि समाज भी हो जावेगा हम बहुत आनन्द में हैं सब सभासदों को नमस्ते ॥

मेरठ हस्ताक्षर
१३ सि० १८७८ दयानन्द सरस्वती

---

(७) (९४)

बाबू माधोलालजी आनन्द रहो !

प्रकट हो चिट्ठी आप की नम्बरी १९४–२० सि० की लिखी हुई पहुंची सब हाल मालूम हुआ, आप के प्रश्न का उत्तर यह है कि हम १ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक मेरठ और दिल्ली रहेंगे जो आप लोग १ अक्टू० के पीछे मेरठ आ जाओगे तो फिर साथ २ दिल्ली चले जावेंगे।

यहां पर आर्य्य समाज हो गया है और व्याख्यान भी होता है सब प्रकार से कुशल है ॥ हम बहुत आनन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।

मेरठ हस्ताक्षर
२३ सि० ७८ दयानन्द सरस्वती

---

(८) (९५)

आर्य्य समाज के मन्त्री बाबू माधोलाल आनन्दित रहो !

तुम्हारी कई चिट्ठियां आई। हम सफर में रहे, इस लिये चिट्ठी का जवाब नहीं भेज सके। विज्ञापन तुम ने छपवा लेने। नमूना भेजते हैं और हम १९ अक्तूबर को प्रयाग जायेंगे तब तुम को और चिट्ठी भेजेंगे। अब हम बनारस नहीं जावेंगे। मिरज़ापुर से दानापुर सीधे चले जावेंगे, रास्ता में कहीं न ठहरेंगे। हमारे पास कोई आदमी आप भेजें। जब हम दूसरी चिट्ठी लिखें तब मिरजापुर में भेजना। मुरादाबाद से विज्ञापन बाबत नवीन पुस्तक छपवाने के आप के पास गया होगा, उस के मुताबिक चन्दा करने का बन्दोबस्त कर रहे होंगे। फर्रुखाबाद से एक हजार रुपया हो गये होंगे। यह चन्दा हम को बनारस में मार्गशीर्ष में जाना होगा सो समझ लेना। हम को दानापुर से लौट कर आरा अथवा जहां कहीं ठहरना होगा वहां ठहरेंगे। मार्गशीर्ष तक बनारस लौट कर आ जावेंगे। और विज्ञापन में स्थान की जगह छोड़ दी है, सो तुम जो जगह निश्चित हो, लिख कर

छपवा देना और तारीख की जगह छोड़ देना । जब हम आयेंगे लिखवायेंगे । हमारे रहने का मकान शहर से एक मील अलग रहे इस से दूर न हो । व्याख्यान का मकान शहर में हो । और रहने के मकान की आबोहवा अच्छी देख लेनी । और हरिहर क्षेत्र के मेला में जायेंगे । वहां का भी बन्दोबस्त, मकान, डेरा, तम्बू वगैरा का कर लेना । अब हम चिट्ठि मिरजापुर से लिखेंगे । और अगले महीना में बनारस में आकर छापाखाना अपना बनवाने की तजवीज करेंगे । सो चन्दा अपने हां जल्दी करना । और अब बनारस में छः महीने रहने का बन्दोबस्त हुआ है, जिस में वेद भाष्य और बाकी पुस्तक जल्दी छप कर तय्यार हो जावेंगे, ऐसा विचार है । मुकाम कानपुर, १२ अक्तूबर ७९ ई० । *

दयानन्द सरस्वती

---

(९) (९६)

बाबू माधोलालजी आनन्दित रहो !

विदित हो कि १९३६ द्वि० आश्विन सुदी ९ गुरुवार ता० २३ अक्टूबर को हम प्रयाग से मिरजापुर आकर सेठ रामरतन के बाग में ठहरे हैं अब तुम लोगों को क्या विचार है । हमारा शरीर बीमार है परन्तु तुम्हारे यहां आने को लिख चुके हैं । आना तो होगा ही व्याख्यान होना, न होना वहां आकर मालूम होगा । और तुम लोगों ने लिखा था कि हमारे सभासद आप को लेने को आवेंगे सो जो आने का विचार हो तो ६ छः दिन के विच यहां मिरजापुर में पूर्वोक्त पते पर आजावें । क्योंकि कार्तिक वदी प्रतिपदा ता० ३० अक्टूबर को हम यहां से चल कर डुमरांव वा आरा अथवा पटना में पहुंचेंगे । इस में सन्देह नहीं ।

सब से मेरा नमस्ते ।

दयानन्द सरस्वती ।

---

* जो पत्र हमें दानापुर से प्राप्त हुए हैं उनमें यह पत्र नहीं है, परन्तु पण्डित लेखरामजी रचित बृहद् जीवनचरित्र के पृ० ४९६ पर यह मिलता है। हम ने वहीं से लेकर इसे शब्दशः देवनागरी लिपि में कर दिया है ।

(१०)
No. 597.

(६७)

Dehllee. Kaboolee Gate
near the Subzimandee
in the Garden of
Lallah Kaishree Chand & Balmookund.
15. 10. 78.

To.

Babco Madho Lall
Arya Samaj Dinapore.

Dear

I have received your letter No. 181 of 31st October to-day, I shall be glad to see you at Dehllee on the address, which has written up. And I have appointed an Arya Samaj in the *Meerutt* and always here I am delivering the Lecture of Vedic reform. I am well and hope you the same.

Sigiure

15-10-78. [दयानन्द सरस्वती]
Dehllee.

देहली काबुली गेट,
सब्जी मण्डी के समीप
ला० केशरीचन्द और बालमुकुन्द के उद्यान में।
१५-१०-७८

बाबू माधोलाल, आर्य्य समाज दीनापुर को।

प्रिय !

आप का पत्र सं० १८१, ३१ अक्तूबर का आज प्राप्त हुआ। देहली में उपरि लिखित पते पर आप को मिल कर मैं प्रसन्न हूंगा और मेरठ में मैंने समाज स्थापन किया है।

वैदिक धर्म पर मैं प्रति दिन यहां व्याख्यान देता हूं। मैं प्रसन्न हूं और आप की प्रसन्नता चाहता हूं।

१५-१०-७८

हस्ताक्षर
दयानन्द सरस्वती
दिल्ली

---

(११) (६८)

No. 636 *Dehllee.*
26. 10. 78.

To.

Baboo Madho Lall
Arya Samaj,
Dinapore.

My Dear

I have received your letter just now and knew the all subjects of it. You must send the account of books to me. When you will go to *Arra* I hope you will say to Baboo Hurbansh Shai for the *Chanda* of Ved Bhashya.

Here I am delivering the Vedic Lecture in these days and hoping that the Arya Samaj will be oppoint at *Dehllee.* I am well and hope you the same.

Swamee D. Nd, Sarrasswatee.
26-10-78. [दयानन्द सरस्वती]
Dehllee.

देहली
सं० ६३६ २६, १०, ७८

बाबू माधोलाल
आर्य्य समाज दीनापुर को।

मेरे प्रिय !

अभी आप का पत्र मिला सब समाचार ज्ञात हुआ। आप को पुस्तकों का हिसाब मुझे अवश्य भेजना चाहिये। जब आप आरा जायेंगे तो मैं आशा करता हूं कि आप बाबू हरबंससहाय को वेदभाष्य के चन्दा के लिये कहेंगे। मैं यहां आज कल वैदिक विषय पर व्याख्यान दे रहा हूं और आशा करता हूं कि दिल्ली में समाज स्थापित हो जावेगा। मैं प्रसन्न हूं और आप की प्रसन्ता चाहता हूं।

२६।१०।७८ दयानन्द सरस्वती
दिल्ली

(१२)   (६६)

Hardwar.
16 March 1879.

Lalla Madho Lall
Secretary, Arya Samaj
Dinapore,

Dear Sir,

I have the pleasure to acknowledge receipt of your letter of 13th instant, containing 3 Currency notes aggrigating Rs. 20/- and postage stamps for annas five, being cash of the books mentioned therein.—

I am very glad to hear that efforts are being made for establishing Arya Sanskrit Patsala still more that Rs. 102/5 are collected in its aid. I shall be happy to hear further of your progress—

There are 10copies of Satyarth Prakash available. The other contents of your letter the 5th Number of Vedá Bhash.

Always your wel wisher.
[दयानन्द सरस्वती]

हरद्वार
१६ मार्च १८७६

लाला माधोलाल
मन्त्री आर्य्यसमाज
दीनापुर

प्रिय महाशय !

आप का १३ तारीख का पत्र मिला, प्रसन्नता हुई। उस में ३ करेन्सी नोट २०) रु० के और पांच आना के टिकट थे। यह रुपया वहां लिखी पुस्तकों की आय है।

मुझे यह सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई है कि आप आर्य्य संस्कृत पाठशाला का यत्न कर रहे हैं, और भी अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि १०२।-) रु० एकत्र हो गये हैं।

इस की सहायता में मैं आगे आप की उन्नति सुन कर प्रसन्न हूंगा।

सत्यार्थप्रकाश की १० प्रतियां मिल सकती हैं। आप की दूसरी बात का उत्तर है, वेद भाष्य का पांचवां अंक।

आप का सदा हितैषी
(दयानन्द सरस्वती)

---

(१३) (१००)

Hardwar.
*10—4—78**

Baboo Madho Lall
Arya Samaj
Dinapore.

Dear Sir

. Informs that American Mission (*Col* H. S. Olcott and countess H. Blavatsky) is coming to see me at Dehra Dun about the 14th current and I hope will stay with me for some months.

Sd Dianand Sarasswatti.

दः दयानन्द सरस्वती
हरद्वार
१०–४–७६

बाबू माधोलाल
आर्य्य समाज
दीनापुर

प्रिय महाशय !

आप को सूचित किया जाता है कि अमरेकन मिशन (कर्नल एच० एस० अल्काट और काउंटेस एच० ब्लवत्स्की) इस मास की १४ तक मुझे डेरादून मिलने आ रहा है और मैं आशा करता हूं कि मेरे साथ कुछ मास तक ठहरेंगे।

दयानन्द सरस्वती

---

* यहां ८ भूल से लिखा गया है। ९ चाहिये।

(१४)

(१००)

Dehra Dun
24th April 1879.

Sir,

I am very glad to receive your letter of 20th instant by this day's post.

You were quite right in remitting the value of Ved Bhashya Bhoomika to Pandit Sunder Lall at Allahabad who can supply you as many more copies as you will want. I have also received the price of the books you had taken from Delhi.—

I have great pleasure to hear of your intention for opening a Sanskrit School, but before you take this most advantageous work in hand I should be informed as to what arrangement you have nade about the standard of various sciences to be studied at the School, have you got all the necessary books ready yet, I think not ! I mean to say that before you go into the work you should have all the books printed first of all. The "Koran" in Nagri is entirely ready but has not been printed yet.

The Astadhyaee has not met the sufficient number of subscribers yet; the 4 adhyas of this are just ready but the work is going on quite well though not (a) copy (has) passed in the press up to date.

The great dishonesty and misconduct on the part of Babu Harish Chandra Chintamani has been the cause of delay in getting the Ved Bhashya out of the press in the proper time. Now the man has been turned out and another man has been appointed in his stead and it is hoped that he will carry out the work very satisfactorily.—

I intend setting up a press at Moradabad under the auspices of Munshi Indra Mani for which purpose a subscription to the amount of Rs. 5000/- is necessary to be raised by shares of 100/- each. Of this sum Rs. 2500/- has already been raised. I hope it will be a great help to the work should you be inclined to take as many shares as you can. In that case you should apply to Lallah Ram Saran Das of Meerut who is authorized to recieve money when the time comes.

Yours truly
Sd. Daya Nand Saraswati
[दयानन्द सरस्वती]

डेहरादून
२४ एप्रिल, १८७९

महाशय !

आज की डाक में आप का २० तारीख का पत्र प्राप्त करके मुझे बड़ा हर्ष हुआ।

वेदभाष्यभूमिका का मूल्य प्रयाग में पण्डित सुन्दरलाल को भेजने में आप ने सब ठीक किया। वे आप को जितनी प्रतियां आप और चाहें, भेज सकेंगे। जो पुस्तकें आप ने दिल्ली से ली थीं, मुझे भी उनका मूल्य मिल गया है।

आप के संस्कृत पाठशाला खोलने का विचार सुन कर मुझे बहुत हर्ष है। पर इस से पूर्व कि आप इस सर्वोपयोगी काम को हाथ में लें, मुझे सूचना दें कि पाठशाला में पढ़े जाने वाले भिन्न २ शास्त्रों के प्रमाण के सम्बन्ध में आप ने क्या क्रम रखा है? क्या अभी आप के पास सब आवश्यक ग्रन्थ तय्यार हैं। मेरा विचार है, नहीं। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि काम को आरम्भ करने से पूर्व आप को सब से पहले सब ग्रन्थ छपवा लेने चाहियें। "कुरान" नागरी में पूरा तय्यार है परन्तु अभी तक छापा नहीं गया।

अष्टाध्यायी के अभी तक पर्याप्त संख्या में ग्राहक नहीं हुए हैं। इस के ४ अध्याय अभी तय्यार हुए हैं। काम सर्वथा भले प्रकार चल रहा है, यद्यपि कोई कापी आज तक यन्त्रालय में से नहीं निकली।

बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि की बड़ी कुटिलता और बुरे आचार के कारण वेदभाष्य के प्रेस में से उचित समय पर निकलवाने में देर होगई है। अब वह बाहर निकाल दिया गया है और उसके स्थान में अन्य पुरुष नियुक्त हुआ है। और यह आशा की जाती है कि वह कार्य्य को सन्तोष जनक रीति से करेगा।

मुन्शी इन्द्रमणि की अध्यक्षता में मुरादाबाद में मेरा एक यन्त्रालय खोलने का विचार है। एतदर्थ ५०००) रु० का चन्दा करना आवश्यक है जो १००) रु० के प्रति भाग द्वारा होगा। इतने में से २५००) रु० पहले एकत्र हो चुका है। मैं आशा करता हूं कि इस से हमारे काम में

बड़ी सहायता होगी, यदि आप की अभिरुचि उतने भाग लेने की हो कि जितने आप ले सकते हैं। तब आप को ला० रामशरणदास मेरठ वालों को लिखना होगा। उन्हें समय आने पर धन लेने का अधिकार है।

आपका शुभचिन्तक

[दयानन्द सरस्वती]

---

(१५)   (१०१)

ओ३म्

बाबू माधोप्रसादादि आनन्दित रहो॥

वृत्तांत यह है कि सब सज्जनों के प्रति एक आनन्द का समाचार प्रकट किया जाता है वोह यह है कि एस एच अलकाटसाहिब था एचपी ब्लेवेस्की लेडी जिनकी पत्री पहिले अमेरिका से अपने समाजों में आई थी उन से हमारा पहिली मई सन हाल को सहारनपुर में समागम होने से मालुम हुआ कि जैसी उनकी पत्रियों से बुद्धि प्रकट होती थी उनके मिलने से अधिक योग्यता और सज्जनता प्रकट हुई। उनके साथ दो दिन सहारनपुर में समागम रहा और समाज के सब पुरुषों ने यथावत् सत्कार किया। उनका उपदेश सुनने से लोगों के चित्त बड़े प्रसन्न हुए। पश्चात वे हमारे साथ मेरठ को आये वहां पर भी सब समाज के लोगों ने सुन्दर रीति से सत्कार किया। और उपदेश का ऐसा सुन्दर चरचा रहा कि जिस से सब को आनन्द हुआ और उपदेश में सब अमीर वा उमराव तथा अहलकार और अंगरेज लोग भी पांच दिन तक बराबर आते रहे॥ और जिस किसी ने मतमतांतर में कुछ शंका की उनका यथार्थता से उत्तर मिलता रहा। अर्थात् अमरीकन साहिबों ने सब लोगों के चित्त पर यह निश्चय करा दिया कि जितनी भलाई और विद्या हैं वे सब वेद से निकली और जितने वेद विरुद्ध मत हैं वे सब पाखण्ड रूप हैं पश्चात् उक्त साहिब तो ७ मई को बंबई चले गये और हम कुछ दिन यहां पर ठहरेंगे। यह जो

उन साहिबों से हमारा समागम है यह इन आर्य्यावर्तादि देशों के मनुष्यों की उन्नति का कारण है। जैसे एक परम औषध के साथ किसी सुपथ्य का मेल होने से शीघ्र ही रोग नाश हो जाता है इसी प्रकार इस समागम से आर्य्यावर्तादि देशों (में) वेदों का प्रकाश और असत्यरूपी रोग का विनाश शीघ्र हो जावेगा। और उक्त साहिबों का आचरण तथा स्वभाव हमको अत्यन्त शुद्ध प्रतीत होता है क्योंकि वे लोग तन मन धन से सब प्रकार वेद मत की स्थापना करने में उद्यत हैं। जो बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने उक्त साहिबों के विषय में यह बात उड़ाई थी कि ये लोग जादू जानते हैं और जासूसों की तरह छल कपटी बातें करते हैं उस की यह बात सब मिथ्या है क्योंकि जिसको जादू कहते हैं वोह यथार्थ में पदार्थ विद्या है उस विद्या को इन्होंने मूर्खों के भ्रम दूर करने और सत्य मार्ग में चलाने के लिये धारण किया है। सो कुछ दोष नहीं है परन्तु हरिश्चन्द्र जैसे मूर्खों को भूषण भी दूषण ही दीख पड़ता है। इस हरिश्चन्द्र ने इन साहिबों के चित्त में ऐसा भ्रम गया कि जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते परन्तु वे सब भ्रम हमारे मिलने से दूर हो गये। देखो इस हरिश्चन्द्र की बेइमानी कि बहुत सा विघ्न वेदभाष्य के काम में कर चुका है। और अब तक भी करता जाता है। इस लिए सब आर्य्य भाइयों को उचित है कि इस को अपने आर्य्य समाजों से बहिष्कृत समझें और इसका किसी प्रकार का विश्वास न करें॥ देखो पूर्व काल में हमारे ऋषि मुनियों को कैसी पदार्थ विद्या आती थी कि जिस से आत्मा के बल से सब के अंतःकरण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे जैसे बाहर की पदार्थ विद्या से सिद्ध किये हुये रेल तारादि विद्या को मूर्ख लोग जादू समझते हैं वैसे ही भीतर के पदार्थों के योग से योगी लोग अनेक अद्भुत कर्म कर सकते हैं इस में कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि मनुष्य लोग जितनी विद्या बाहर के पदार्थों से सिद्ध करते हैं उस से कइ गुणी अधिक भीतर के पदार्थों से सिद्ध कर सकेत हैं। जैसे बाहर के पदार्थों का उपयोग बाहर से होता है वैसे ही भतिर के पदार्थों का उपयोग भीतर से होता है जैसे स्थूल पदार्थों की क्रिया आंखों से देख पड़ती है वैसे सूक्ष्म पदार्थों की क्रिया आंखों से नहीं देख पड़ती इसी कारण लोग आश्चर्य मानते हैं। हां यह कह सकते हैं कि बहुत से धूर्त लोग उस

विद्या को तो जानते नहीं झूठे जाल रच कर सत्य विद्या को बदनाम करते हैं इस प्रकार झूठों का तिरस्कार और सच्चों का सत्कार सर्वथा करना चाहिये परन्तु जिस समय किसी का असत्य प्रकट हो जावे उसी समय उसका परित्याग करना चाहिये जैसे बहुत दिनों के पश्चात हरिश्चन्द्र का कपट प्रकट होने से अपने आर्य्य समाजों से बाहर किया गया इसी प्रकार जिस किसी पुरुष का प्रकट हो जावे उस को ततकाल ही अपने समाजों से अलग करदो चाहे कोई क्यों न हो असत्यवादी की सर्वदा परीक्षा करते रहो ॥ इसी का नाम सुधार है। क्योंकि बुद्धेः कलमनाग्रहः जब यही सत्पुरुष का लक्षण है तब उसको सच्चा ज्ञान हुआ जानो जब अपने निश्चय किये हुये में भी जितना असत्य जाने उस को उसी समय त्याग दे। तो उस को दूसरे का असत्य छोड़ने में क्या आश्चर्य्य है ऐसे काम के विना न आप सुधर सकता है और न दूसरे को सुधार सकता है ॥ अब इस पत्री को इस वृत्तांत पर पूर्ण करता हूं कि इन साहिबों के पूर्व पत्रों और सात दिन बात चीत करने से निश्चय किया है कि इनका तन मन धन सत्य के प्रकाश और असत्य के विनाश और सब मनुष्यों के हित करने में है। जैसा कि अपने लोगों का निश्चय उद्योग है। वेदभाष्य अब शीघ्र आने वाला है कुछ चिन्ता मत करना।

७/५ १८७९ मेरठ। (दयानन्द सरस्वती)

---

(६) (१०२)

बाबू माधोलाल जी आनन्दित रहो!

हम वहां से चल के आनन्दपूर्वक काशी में पहुंच कर महाराजे विजानगर के आनन्द बाग में ठहरे हैं यह बाग बहुत अच्छा है। हवा और जल यहां का बहुत अच्छा है मकान भी इस बाग में बहुत और उत्तम हैं यह बात प्रसिद्ध है इसमें ठहरने के लिये लाजरस साहेब ने प्रबन्ध कर रक्खा था चिट्ठी पहुंचने पर जैसा यह बाग है वैसा काशी में दूसरा नहीं है इसके आगे जो २ अवश्य लिखने योग्य समाचार हों वे २ लिखे

जांयगे आप लोग भी लिखते रहना । सब से हमारा नमस्ते कहना ॥

सं० १९३६ मि० का० सद० ८ शुक्रवार ।

दयानन्द सरस्वती
काशी ।

---

(१७) (१०३)

मंत्री आर्य्य समाज दानापुर आनंदित रहो !

मैं आप परोपकार, प्रिय धार्म्मिक जनों को सब जगत के उपकारार्थ गाय बैल और भैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करने का और दूसरा जिसके अनुसार सही करनी करानी है दो पत्र भेजता हूं । इस को आप प्रीति और उत्साह पूर्वक स्वीकार कीजिये जिस से आप महाशय लोगों की कीर्त्ति इस संसार में सदा विराजमान रहे । इस काम को सिद्ध करने का विचार इस प्रकार किया गया है कि २०००००० दो करोड़ से अधिक राजे महाराजे और प्रधान आदि महाशय पुरुषों की सही कराके आर्य्यावर्त्तीय श्रीमान् गवरनरजनरल साहेब बहादुर से इस विषय की अर्जी करके उपरि लिखित गाय आदि पशुओं की हत्या को छुड़वा देना । मुझ को दृढ़ निश्चय है कि प्रसन्नता पूर्वक आप लोग इस महोपकारक कार्य्य को शीघ्र करेंगे । अधिक प्रति भेजने का प्रयोजन यह है कि जहां २ उचित समझें वहां २ भेज कर सही करा लीजिये । पुनः नीचे लिखित स्थान में रजिष्टरी कराके भेज दीजिये लाला रामशरण रईस मंत्री आर्य्यसमाज मेरठ ॥ अलमतिविस्तरेण धर्म्मिवरशिरोमणिषु ॥ ताः १२ मार्च सन १८८२ ई०

(दयानन्द सरस्वती) (मम्बई)

---

(१८) (१०४)

बाबू माधोलालजी आनन्दित रहो !

अबतक छापे खाने की कुछ सामग्री आई नहीं और न कुछ पण्डित सुन्दर लाल का जवाब आया । अब आप लोग इसका बहुत शीघ्र भाव ताव टेप् का नमुना और रायलप्रेस का मूल्य लिखकर हमारे पास भेजिये । इसमें जितना बने उतनी शीघ्रता कीजिये । हम को सब छापखानों

से तिगुना चौगुना टैप् लेना होगा । उसके केस, लकड़ी, सबका भाव लिखना ।

मुंसी बख़तावरसिंह मंत्री आर्य्यसमाज साजहांपुर ने ३०) रुपये मावारी पर छापेखाने का सब प्रबन्ध करने के लिये सरकारी नौकरी छोड़के आने का स्वीकार किया है । ये बहुत अच्छे आदमी हैं तीनों भाषा पढ़े हुए सब काम अच्छा चलेगा छापेखाने का काम सब जानते हैं । और विज्ञापन पत्र आज छप चुके हैं सो भी तुम्हारे पास भेजते हैं ।

[दयानन्द सरस्वती]

---

(१) (१०५)

आर्य्यसमाज लाहोर के सब सभासदों को नमस्ते विदित हो । आगे अमृतसर से जाकर जालन्धर में पहुंच गये । सरदार सुचेतसिंहजी के बाग में ठहरा हूं । आगे जो जो विशेष व्यवहार होगा सो लिखा जायगा। आगे सरदार विक्रमसिंहजी बहुत अच्छे पुरुष हैं । वेदभाष्य का छटा अंक आ गया वा नहीं । मोहर लगाकर मोहर को अमृतसर भेज देना । सम्वत् १९३४ मिति भाद्र सुदी शनिवार, ता० १५ सितम्बर सन् १८७७ ।

जालन्धर दयानन्द सरस्वती

---

(१) (१०६)

बाबू समर्थदानजी आनन्द से रहो । विदित होवे कि आज जुगल विहारी शर्म्मा की एक चिट्ठी आई, जिससे जाना गया कि वहां चन्दा का कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ है । सो तुम कुछ चिन्ता मत करो । अब मिलना न हो तो फिर कभी मिलेंगे । और कुछ शोक मत समझो । हम तुम्हारे प्रेम को खूब जानते हैं और कुछ शोक की बात नहीं है । यहां पर भी आनन्द पूर्वक व्याख्यान हो रहा है, और सब प्रकार से कुशल है । हम बहुत आनन्द हैं ।*

२१ अक्तूबर सन् १८७८ हस्ताक्षर (दयानन्द सरस्वती)

देहली,

---

* यह मत्र अजमेर को लिखा गया था ।

(१) (१०७)

लाला मूलराजजी एम. ए. आनंद रहो !

विदित हो कि तारीख़ १८ अगस्त को बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणिजी और श्री श्यामजीकृष्ण वर्म्मा हम से मिलने के लिये बम्बई से अलीगढ़ को चले हैं और २१ वा २२ तारीख़ तक वे वहां आ पहुंचेंगे और हम भी २२ तारीख़ को अलीगढ़ पहुंच जावेंगे।

आपको उचित है कि आप भी २२ वा २३ तारीख़ तक अलीगढ़ पहुंच जायँ परंतु आप अकेले ही चले आना।

और स्टेशन के पास ही ठाकुर मुकुंदसिंहजी का बाग़ीचा पूछ लेना वहीं पर हम ठहरेंगे ॥

हम बहुत आनंद में हैं।

और इस चिठ्ठी तथा अपने आगमन की प्रसिद्धि न कर(ना) } हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती रुड़की ज़ि सहारनपुर { २० अगस्त १८७८

---

(२) (१०८)
नं० ३४०

लाला मूलराजजी एम. ए. आनंद रहो !

विदित हो कि हम और हरिश्चन्द्र चिन्तामणिजी कल २६ अग० को यहां से सवार होकर मेरठ पहुंचेंगे, और बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, श्यामजीकृष्ण वर्म्मा, और मूलजी ठाकुरशी, २७.अगस्त दिन मंगलवार मेल ट्रेन पर सवार होकर बुधवार २८ ता० को प्रातःकाल ८ बजे लाहौर आवेंगे। सो आप सब आर्य्य लोक स्टेशन पर मौजूद रहैं और उनको अच्छी प्रकार से ख़ातिर के साथ लेकर अपनी बैठक वा आर्य्य समाज वा किसी और अच्छे मकान में ठहरा देवें। और हर तरह से ख़ातिर रक्खें।

एक व्याख्यान हरिश्चन्द्र चिन्तामणिजी देवेंगे। और दो व्याख्यान श्यामजी कृष्ण वर्म्मा देवेंगे, एक अंग्रेज़ी और एक संस्कृत। फिर वे अमृतस(र) आवेंगे, सो आप सब लोक अच्छी तरह से उनका इसतक़बाल

करें ॥ रुड़की में आर्य्यसमाज बन गया है। हम बहुत आनंद में हैं। सब सभासदों को नमस्ते ॥

२५ अगस्त १८७८ } हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती अलीगढ़ {

---

(३) (१०९)

To

Lala Mulraj, M. A., Officiating Extra Assistant Commissioner, Multan.

Benares, dated 16th February 1880.

NAMASTE,

Your letter, dated 11th February 1880, received. It has given me great pleasure to hear of your appointment as an Extra Assistant Commissioner. May God raise you still higher. As regards matters over here, the Lieutenant-Governor has as yet sent us no reply. The Magistrate Sahib verbally tells us to commence lecturing, but shrinks from giving the order in writing. We have come to know that the Lieutenant-Governor forwarded our application to the Magistrate for his remarks, and the Magistrate returned it (about one week ago) saying that he had stopped the lectures on account of the Muharram procession, fearing lest a quarrel may not arise. We expect to get a reply in a day or two. We have not thought it proper to commence lecturing without a written order of the Local Government. This will settle the matter once for all.

We will commence our series of lectures with great earnestness. The press has been started and named Vedic Press. A notice to that effect is sent separately to-day. Namaste to all.

(Sd.) Dayananda Saraswati.

लाला मूलराज एम० ए० स्थानापन्न
एकस्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर, मुलतान
बनारस, १६ फरवरी १८८०

नमस्ते !

आप का पत्र, ११ फरवरी १८८० का मिला। आप की एकस्ट्रा

असिस्टेंट कमिश्नर पर नियुक्ति सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । परमात्मा आप को और भी उन्नत करे । यहां का हाल यह है कि लाट साहब ने अभी तक हमें कोई उत्तर नहीं दिया । मजिस्ट्रेट साहिब मौखिक रूप से हमें व्याख्यान आरम्भ करना कहते हैं पर लिखित आज्ञा के देने में संकोच करते हैं । हमें पता लगा है कि लाट साहब ने हमारा प्रार्थनापत्र मजिस्ट्रेट को उस की सम्मत्यर्थ भेजा था, और मजिस्ट्रेट ने (लग भग एक सप्ताह हुए) उसे यह कह कर लौटा दिया था कि उस ने मुहर्रम मेले के कारण व्याख्यान बन्द किये थे, इस भय से कि कोई झगड़ा न उठ पड़े । हम एक या दो दिन में उत्तर की आशा रक्खते हैं । हम ने स्थानीय सरकार की लिखित आज्ञा विना व्याख्यान आरम्भ करना उचित नहीं समझा । इस से इस बात का सदा के लिये निर्णय हो जायगा ।

हम अपने व्याख्यानों का क्रम बड़े उत्साह से आरम्भ करेंगे । यन्त्रालय चला दिया गया है । इस का नाम वैदिक यन्त्रालय रखा गया है । इस विषय का एक विज्ञापन आज पृथक् भेजा जाता है । सब को नमस्ते ।

ह० दयानन्द सरस्वती

---

(४) (११०)

Meerut,
27th July 1880.

My Dear Babu Mulrajji, M. A.

It is a long time since I have heard nothing from you, still I hope you are quite well and wish you to give me, in future, occasional, if not often, intimation of your destination, &c.

I am at Meerut for a fortnight last and intend staying here for about 20 days more.

I have a mind to address our Government on a subject which is unquestionably a matter of public good, now wished for by hundreds of men, who have attended to my lectures, &c. It is that Government may be moved to pass a regulation by which children of widows be entitled to claim and obtain their rights of the property, both movable and immovable, of their parents, and

that any one trying to injure the widow in any way be made liable to punishment by Government.

The results which I anticipate from the above are, that lives of thousands of children will be saved, miscarriages shall be minimised or not at all, *Niyog* or remarriage of widows will thus be introduced at last &c. &c., &c. (*sic*) But this is a work not to be dealt with by men of ordinary abilities. I, therefore, leave the matter to you and ask you to frame regulations worthy of the subject, giving everything requisite in detail. I hope you will agree with me and do the needful. I have given you only the hints, you have to think upon and frame what is called a law, complete in all respects, having sections, clause, &c, for every part of the point in view. This draft regulation may be sent to me as soon as ready in a complete state for submission of Government under my signature, but the sooner it is done so much the better.

There is a piece of *bad* news too which requires your advice, and considerable efforts which it may be worthy of. I think you know well Munshi Indra Man of Muradabad. He is now President of the Arya Samaj there, and a personage of unrivalled excellence. No, he is universally known and it is useless to enter into detail as regards him. The Mohammadans are his great enemies and have always been playing tricks to injure him but in vain. They have succeeded this time to mortify him to the very soul, and that injury is not to him alone, but for all the Aryas.

History of the case stands thus that a newspaper, called *Jam-i-Jamshed* of Muradabad, published an article on 16th May last stating that Munshi Indra Man, enemy of Islam, had published some books in these days against *Mohammadanism* which will give rise to a general disturbance in the Mohammadan community, and that he will lose his life by similar acts one day or other. It is not known how the Magistrate and Collector of the city allowed him this liberty. Now *I solicit* the Government to order destruction of the books he has published and abolition of the Press.

The said newspaper was laid before Government (I mean H. H. the Lieutenant-Governor) and enquiry made through District authorities, which unfortunately resulted on 24th instant in the infliction of a fine of Rs. 500 on Munshi Indra Man and the confiscation of all his books, without any due enquiry into the matter. As the matter is of great concern not only to *Munshi Indra Man*, but to our country and to all of us, I, therefore, ask your advice in the matter how to proceed. In the meantime, arrangements will be made to prefer an appeal in the case. Early answer with full directions to go in this critical matter is requested.

I have yesterday received a letter from a gentleman of Germany accepting instructions of our countrymen in any act they like. *(sic)* This is a good chance indeed, and if you like to allow your brother to try his fortune, it is all that I want. Any other Aryan worthy of the task, will also be welcome. Full particulars as to expense, voyage, &c., &c., will be communicated to you at leisure time.

All is well here and hope the same to be with you.

Hoping to hear from you soon.

I am,

Yours, &c.

(Sd.) Daya Nand Saraswati.

P. S.—After all, I again ask you to interest yourself in this matter and expedite your advice &c.

मेरठ

२७ जुलाई १८८०

मेरे प्यारे बाबू मूलराज जी एम. ए.

चिर काल से आप का कोई पत्र नहीं आया, फिर भी मैं आशा करता हूं कि आप सर्वथा अच्छे हैं और चाहता हूं कि भविष्य में यदि अधिक नहीं तो कभी २ अपने स्थानादि की सूचना देंगे।

मैं पिछले पत्र से मेरठ में हूं और लगभग २० दिन और यहां ठहरने की इच्छा है।

मेरा विचार अपनी सरकार को एक ऐसे विषय पर लिखने का है जो निस्सन्देह जनता का हितकारी है जिसे अब मेरे व्याख्यानों आदि के सुनने वाले सैंकड़ों पुरुष चाहते हैं। वह यह है कि सरकार को एक ऐसा नियम पास करने के लिये कहना चाहिये जिस से कि विधवाओं की संतान अपने पिताओं की स्थावर और जंगम सम्पत्ति के अधिकार को प्राप्त करे और उसे ले सके। और जो कोई विधवा को किसी प्रकार भी कष्ट दे वह सरकार का दण्ड भागी बने।

पूर्वोक्त बात से मैं इन फलों का विचार करता हूं कि हजारों बालकों के जीवन बचाये जांयगे। गर्भपातन बन्द या कम हो जायगा, इस प्रकार नियोग या विधवाओं का पुनर्विवाह अन्ततः प्रचलित होगा......। परन्तु इस काम को साधारण योग्यता के पुरुष नहीं कर सकते, इस लिये मैं यह विषय आप पर छोड़ता हूं और चाहता हूं कि आप यथायोग्य नियम बनायें जिन में सब आवश्यक बातें विस्तार से आ जायें। मैं आशा करता हूं कि आप मेरे से सहमत होंगे और अवश्य काम करेंगे। मैंने आप को संकेत मात्र दिये हैं, आप ने ही विचार कर नियम बनाना है जो सब प्रकार से पूर्ण हो और जिस में दृष्टिगत बात के प्रत्येक भाग के लिये दफा आदि बनें। जब यह मसौदा पूर्णतया तय्यार हो जाये तो मुझे भेज दें, मैं इसे अपने हस्ताक्षर सहित सरकार के पास भेजूंगा, और यह जितना शीघ्र हो उतना ही अच्छा है।

एक अशुभ समाचार भी है, जिस में आप की सम्मति और यथायोग्य बहुत परिश्रम की आवश्यकता है। मेरा विचार है आप मुन्शी इन्द्रमन मुरादाबादी को भले प्रकार जानते हैं। वह अब वहां की आर्य्य समाज के प्रधान हैं और अद्वितीय योग्यता के पुरुष हैं। नहीं, वह सर्वत्र प्रसिद्ध हैं अतः उन के विषय में अधिक कहना निरर्थक है। मुसलमान उन के बड़े शत्रु हैं और सदा निष्फल ही उन्हें कष्ट देने के उपाय घड़ते रहे हैं। अब वे उन्हें असन्त बांध लेने में सफल हुए हैं, और यह हानि उन्हीं की नहीं, प्रत्युत सब आर्य्यों के लिये है।

मुकद्दमे का वृत्तान्त ऐसे है कि मुरादाबाद के एक पत्र जामे-जमशेद ने गत १६ मई को एक लेख इस विषय का प्रकाशित किया 'कि

इसलाम के शत्रु मुन्शी इन्द्रमन ने इन दिनों महम्मदी मत के विरुद्ध कुछ ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं। इन से महम्मदी श्रेणी में एक सामान्य विप्लव हो जायगा, और वह एक न एक दिन अपने जीवन को खो बैठेगा। यह ज्ञात नहीं होता कि नगर के मजिस्ट्रेट और कलेक्टर ने उन्हें कैसे यह स्वतन्त्रता दे दी। अब मैं सरकार से प्रार्थना करता हूं कि वे उस के प्रकाशित ग्रन्थों को नष्ट कर दे और प्रेस को तोड़ दे।

पूर्वोक्त पत्र सरकार (मेरा अभिप्राय लाट साहब से है) के सामने रखा गया और जिला अफसरों द्वारा पड़ताल हुई। उस का दुर्दैव से २४ तारीख को यह फल निकला कि विना किसी उचित पड़ताल के मुन्शी इन्द्रमन पर ५०० रुपये दण्ड हुआ और उन के सारे ग्रन्थ जबत हुए। क्योंकि यह बात केवल मुन्शी इन्द्रमन के लिये ही बड़ी नहीं, प्रत्युत हमारे देश और हम सब के लिये भी है, इसलिये मैं आप की सम्मति चाहता हूं कि इस विषय में क्या किया जाय? इस अन्तर में मुकदमे की अपील दायर किये जाने का प्रबन्ध किया जायगा। इस सूक्ष्म विषय में पूर्ण-निर्देशयुक्त उत्तर शीघ्र चाहिये।

मुझे कल जर्मनी से एक महाशय का पत्र आया है। उस ने स्वीकार किया है कि वह हमारे देशीय लोगों को किसी भी विषय में शिक्षा देगा। यह निश्चय ही अच्छा अवसर है, और यदि आप अपने भ्राता को दैव परीक्षा में डालना चाहते हैं, तो बस मैं यही चाहता हूं। कोई अन्य आर्य्य सज्जन जो इस काम के योग्य हैं बड़ी प्रसन्नता से लिये जायेंगे। व्यय, यात्रादि का पूर्ण व्योरा अवकाश मिलने पर आप को लिखा जायगा।

यहां सब आनन्द है और आप का आनन्द चाहते हैं।

आशा है आप शीघ्र उत्तर देंगे।

मैं हूं आप का

ह० दयानन्द सरस्वती

पु० नि०—अन्ततः मैं पुनः कहता हूं कि आप इस विषय में ध्यान दें और अपनी सम्मति आदि से कृतार्थ करें।

---

(५) (१११)

लाला मूलराजजी आनन्दित रहो !

मुन्शी इन्द्रमन सम्बन्धी जो पत्र हम ने उर्दू में भेजा है उसका अंग्रेजी में अनुवाद होना है। जो पत्र जर्मनी से आये हैं वह आप के देखने के लिये ला० आनन्दीलाल द्वारा भेज दिये हैं। कृपया हमें बताना कि क्या उत्तर दिया जाय ? मेरा विचार है कुछ पुरुष कला कौशल सीखने के लिये जर्मनी भेज दिये जाएं। परन्तु यदि यहीं आर्य्यावर्त में ऐसा सिखाने वाले पुरुष मिल जायें तो बाहर जर्मनी को आदमी भेजने की कोई आवश्यकता नहीं।

यहां मुन्शी इन्द्रमन के लिये ३००) रुपये चन्दा हो गया है। इस विषय में किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचने के लिये हम ने आप को सब आवश्यक पत्र भेज दिये हैं। कृपया बहुत सोच विचार के पश्चात् अपील के हेतू तय्यार करें, क्योंकि इसे बहुत बड़े पुरुषों के पास भेजना है। इस अपील के मुकद्दमे सम्बन्धी खर्च के लिये १५०० रुपये पंजाब से चन्दा करना है और १५०० रुपये दूसरे परान्तों से। यह अच्छा है कि पंजाब से १५०० रुपये एकत्र करने का आप प्रबन्ध करें।

जो पत्र हमने आपत्काल के धर्म्म नियोग सम्बन्धी लिखवाया था, मैं ने शोक से जाना है कि लेखक वह अभिप्राय नहीं प्रकट कर सका जो मैं आप को जताना चाहता था, और इस लिये आप इसे न समझ सके।

आप का संकेत नियम के सम्बन्ध में कि यह पुनर्विवाह को बताता है और नियोग को नहीं, इस के लिये मैंने अब एक कानूनी मसौदा एक विधवा की दुःखित अवस्था को दूर करने के लिये बनाया है। मैं वही एक या दो दिन में आप को आवश्यक शुद्धियों के लिये भेज दूंगा। १. इस का प्रयोजन नियोग होगा २. विधवा की सन्तान मृत पति की सम्पत्ति की दायभागी होगी ३. उन्हें हरामी या जाति से बाहर न समझा जाय ४. विधवा की जाति के लोग उसे किसी प्रकार तंग न करें ५. कानून भी उसे दुःख न दे। ऐसे नियम के पास होने से गर्भ पातन बन्द हो जायगा, और सैकड़ों बालकों के जीवन बच जांयगे, और आज कल की तरह किसी के दायभाग में आई सम्पत्ति या जागीर, अथवा कुल की वृद्धि बंद [illegible]

नष्ट न होगी, क्योंकि उस अवस्था में नियोगज सन्तान विवाह से उत्पन्न होने वालों के समान अधिकार रखेगी, उस में कोई भी भेद न होगा। चाहे नियम जनता के सामने किया जाता है या और रूप से यह एक ही है। मसौदा पूर्वोक्त नियमानुसार होगा। जब हम आप को फिर इसी विषय पर लिखें तो आप को ऐसे ही समझना होगा। श्रावण सुदी ४ सं० १९३७ *

ह० दयानन्द सरस्वती

---

(६) (११२)

लाला मूलराज जी, आनन्दित रहो!

आप का २६ नवम्बर का पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। आजकल हम आगरा में हैं और व्याख्यान देते हैं और लगभग एक मास यहां रहने का विचार है।

यह अब स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती, या वे जीवन-निर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था देख कर मैं एक कला कौशल के स्कूल की आवश्यकता विचारता हूं। प्रत्येक पुरुष को अपनी आय का १००वां भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिये। उस धन से चाहे तो विद्यार्थी कला कौशल सीखने जर्मनी भेजे जावें या वहां से अध्यापक यहां बुलाए जायं। जो कोई इस फण्ड के व्यय पर इन धन्दों को सीखे, उसे प्रतिज्ञा करनी होगी कि स्वशिक्षा समाप्त करने पर सभा या फण्ड की वह १२ वर्ष तक सेवा करेगा। यह प्रश्न यहां विचारा जा रहा है और जब कोई परिणाम निकलेगा तो हम आप को सूचना देंगे। मैंने एक गुजरांवाला के आत्माराम जैनी के प्रश्नों के उत्तर लिखवाये हैं और वहां के आर्य्यसमाज द्वारा उसे भिजवाये हैं। मुझे इन के विषय में सब कुछ लिखना। कर्नल आल्काट और मेडम ब्लेवस्तकी के पत्र का उत्तर मैंने भेज दिया है। मैं आशा करता हूं कि आप ने उसे देखा लिया है। वह नास्तिकता की ओर झुके हुए दिखाई देते हैं। कदाचित वह पहले भी ऐसे ही झुके हुए थे, परन्तु दूसरे के मन

---

* यह और अगले ४ मूलपत्र हमें नहीं मिल सके। ला० मूलराजजी ने कहा था कि उन्हें चूहे काट गये हैं। हम ने अंग्रेज़ी से इनका अनुवाद दिया है। अंग्रेजी न देने का प्रयोजन यह है कि वस्तुतः यह पत्र आर्य्यभाषा में थे।

की कोई क्या कह सकता है ?

मुझे अपने भाईयों और उनके अब के पता का हाल लिखो। अब समय है कि आप ला० श्रीराम को कला कौशल सीखने इङ्गलैण्ड भेज दें।

जर्मनी से पत्र आ रहे हैं। हम सब आनन्द में हैं। सब से हमारा नमस्ते [illegible] दें।

[illegible] रस्वती

३० [illegible] यारीलाल

आगरा।

(७) (११३)

[illegible] को वसीयत भेज दी [illegible] तक उसके उत्तर में [illegible] स्ते कह दें। हम सब [illegible] हते हैं।

[illegible] न्द सरस्वती

(८) (११४)

[illegible] विदित हुआ। हम आप को मेडम ब्लवत्स्की का पत्र अपने उत्तर सहित भेजते हैं। उस में जो कुछ परिवर्तन करें, उस की हमें पहले सूचना दे दें।

आप उसे मुम्बई आर्य्यसमाज द्वारा पत्र भेज दें। कृपया देखने के पश्चात मेडम ब्लवट्स्की का पत्र हमें लौटा दें। आज कल आत्माराम कहां

नष्ट न होगी, क्योंकि उस अवस्था में नियोगज सन्तान विवाह से उत्पन्न होने वालों के समान अधिकार रखेगी, उस में कोई भी भेद न होगा। चाहे नियम जनता के सामने किया जाता है या और रूप से यह एक ही है। मसौदा पूर्वोक्त नियमानुसार होगा। जब हम आप को फिर इसी विषय पर लिखें तो आप को ऐसे ही समझना होगा। श्रावण सुदी ४ सं० १९३७ *

ह० दयानन्द सरस्वती

---

(६) (११२)

। समाचार ज्ञात हुआ ।
हैं और लगभग एक मास

लोगों को भी नौकरी
हीं कर सकते । ऐसी
की आवश्यकता विचारता
ग प्रस्तावित संस्था को
कौशल सीखने जर्मनी
। जो कोई इस फण्ड
री होगी कि स्वशिक्षा
ाक सेवा करेगा । यह
निकलेगा तो हम आप
प जैनी के भ्रमों के
उसे भिजवाये हैं ।
आलकाट और मेडम
ं आशा करता हूं कि
ए नास्तिकता की ओर झुके हुए दिखाई
देते हैं । कदाचित् वह पहले भी ऐसे ही झुके हुए थे, परन्तु दूसरे के मन

* यह और अगले ४ मूलपत्र हमें नहीं मिल सके । ला० मूलराजजी ने कहा था कि उन्हें चूहे काट गये हैं । हम ने अंग्रेज़ी से इनका अनुवाद दिया है। अंग्रेजी न देने का प्रयोजन यह है कि वस्तुतः यह पत्र आर्य्यभाषा में थे ।

की कोई क्या कह सकता है ?

मुझे अपने भाईयों और उनके अब के पता का हाल लिखो। अब समय है कि आप ला० श्रीराम को कला कौशल सीखने इङ्गलैण्ड भेज दें।

जर्मनी से पत्र आ रहे हैं। हम सब आनन्द में हैं। सब से हमारा नमस्ते कह दें।

ह० दयानन्द सरस्वती
बाग गिरधारीलाल
आगरा।

३० नवम्बर १८८०

---

(७) (११३)

लाला मूलराजजी आनन्दित रहो !

आज कल हम मुज़फ्फरनगर में हैं। हम ने आप को वसीयत भेज दी थी, क्या वह आप को पहुंची या नहीं ? हमने अभी तक उसके उत्तर में कुछ नहीं जाना, क्या कारण है ? सब से हमारा नमस्ते कह दें। हम सब सर्वथा आनन्द में हैं और आप सब का आनन्द चाहते हैं।

अक्तूबर १८८०

ह० दयानन्द सरस्वती

---

(८) (११४)

लाला मूलराजजी एम. ए. आनन्दित रहो !

आप का ६ दिसम्बर का पत्र मिला, समाचार विदित हुआ। हम आप को मेडम ब्लवत्स्की का पत्र अपने उत्तर सहित भेजते हैं। उस में जो कुछ परिवर्तन करें, उस की हमें पहले सूचना दे दें।

आप उसे मुम्बई आर्य्यसमाज द्वारा पत्र भेज दें। कृपया देखने के पश्चात् मेडम ब्लवट्स्की का पत्र हमें लौटा दें। आज कल आत्माराम कहां

है ? जैनों के उत्तर में जो पत्र हम ने लिखे थे वे अवश्य समाज के कार्यालय में होंगे । अच्छा होगा यदि आप उन सब को किसी समाचार पत्र में प्रकाशित करवा दें । अब हम उस समाज द्वारा जैनों को कुछ प्रश्न करना चाहते हैं । आप अच्छा हो जो उस समाज से पूछ लें और हमें सूचना दें । क्या आप मुझे बता सकते हैं कि कला कौशल सिखाने का स्कूल कहां है ?

यहां नगर के बाहर गोकुलपुर में एक छोटा सा समाज स्थापन किया गया है । सब को नमस्ते ।

[ह० दयानन्द सरस्वती]

आगरा ।

---

(९) (११५)

लाला मूलराजजी एम. ए. आनन्दित रहो !

आप को लिखा जाता है कि जब बाबू शिवदयालजी यहां थे, तो उन्होंने पण्डित बिहारीलाल को हमारे यन्त्रालय में काम करने को भेजने और श्रीराम को विलायत भेजने की हम से प्रतिज्ञा की थी । क्या आप हमें लिखेंगे कि इस विषय में अन्तिम निर्णय क्या हुआ है ? यहां एक गोरक्षिणी सभा स्थापन की गई हैं और इस के नियमोपनियम भी बना दिये गये हैं, जब छपेंगे तो आप को सूचना के लिये भेज देंगे । आज इसी विषय पर एक और सभा की जायगी ।

मुन्शी बख़्तावरसिंह ने यन्त्रालय की बड़ी हानि की है । आज कल हम यन्त्रालय के हिसाब की जांच कर रहे हैं । जो आगे होगा सो लिखूंगा । सब से मेरा नमस्ते कहना ।

१२ जनवरी १८८१ ह० दयानन्द सरस्वती

आगरा ।

---

(१)

(११६)

Bareilly,
18 Nov. 1876

FROM.

Dayanand Saraswati
Bareilly

To.

Babu Ramádhara Bajpai
Hd. Clerk Govt, Tele: Office
Lucknow.

Dear Sir,

The first copy of the Veda Bhashya will shortly issue so you must try with your whole heart and soul to secure as many subscribers as you can in your town.

My Babu will start for Benares on Monday to have the tract published atonce and distribute among the subscribers.—On his way down he will stop at your town for a day. I have instructed to take his quarters at the *Patshala* if Gangesh Swami is there; please inform him about it.

As for my doings here and at Shajahanpur, I think, you have already heard from Gangesh Swami, the rest you can hear from my Babu. I don't think there is any necessity of detailing it here.

Hoping you are in the enjoyment of perfect health.

My blessings to all of you.

Yours ffly
दयानन्द सरस्वती
बरेली १८ नवं० १८७६

दयानन्द सरस्वती
बरेली से
बाबू रामाधार वाजपई
हेड क्लर्क सरकारी तार घर
लखनऊ।

प्रिय महाशय !

वेदभाष्य का प्रथमांक शीघ्र निकलेगा, सो आप को अपने नगर

में जितने ग्राहक आप बना सकते हैं, बनाने के लिये पूर्ण तन, मन से यत्न करना चाहिये ।

ट्रैक्ट को तत्काल छपवाने और ग्राहकों में बटवाने के लिये मेरा बाबू सोमवार को बनारस की ओर चलेगा । और नीचे को जाते हुए वह आप के नगर में एक दिन के लिये ठहरेगा । मैं ने उसे कह दिया है कि यदि गङ्गेश स्वामी वहीं हों तो वह पाठशाला में उतरे । कृपया उन्हें यह कह दें ।

शाहजहांपुर और यहां के मेरे कार्य के सम्बन्ध में, मेरा विचार है, आप पहले ही गङ्गेश स्वामी से सुन चुके होंगे, शेष आप मेरे बाबू से सुन सकते हैं । मेरा विचार है कि उस का यहां विस्तार करने की कोई आवश्यकता नहीं ।

आशा है आप पूर्ण स्वास्थ्य का आनन्द ले रहे होंगे ।

मेरा आप सब को आशीर्वाद ।

आपका विश्वसनीय
दयानन्द सरस्वती

---

(२) (११७)

Meerutt.
6/2/77

My dear Sir

I am very happy to acknowledge the receipt of your letter date unknown, and feel much pleasure to learn from your writing that you have procured good many subscribers for Veda Bhasya. Please inform all those subscribers *who are ready to buy monthly tract, to send their subscription money to Benares to the address of Messrs E. J.* Lazarus & Co. Medical Hall Press Benares. *The Bigyapan Pattra's or notices are not intended to be sold for price, but only to improve the number of subscribers for Veda-Bhasya,* so please *show and give* them to all of your friends and neighbours who are expected to be subscribers for Veda-Bhasya. E. J. Lazarus & Co. will acknowledge receipt for the money which is to be sent to him, but all subscribers must send their respective *correct addresses for receiving their copies from him* (Messrs

E. J. Lazarus & Co.)

I hope you will keep continue trying your utmost in increasing the No. of subscribers. Hoping you are alright with your family. I am to stay here up to 15th inst and then will leave this for Saharanpore. An early answer will ever oblige. Annual subscription for Veda-Bhasya is 4/8/- only.

Yours well wisher
Swami Dayanand Saraswati
Sd. दयानन्द सरस्वती

Please let me know *the total No of subscribers* already collected by you in Lucknow. I have written five copies in my list against your name for furnish. You with five copies and others can get more on advancing their annual subscription Rs. 4/8/- only.*

Sd. Swamee D. Nand Sarusswatti.

दयानन्द सरस्वती

मेरठ,
६-२-७७

मेरे प्रिय महाशय !

आप के अज्ञात तारीख के पत्र की रसीद की स्वीकृति बताने में मुझे बड़ा आनन्द है, और आप के लेख से यह जान कर बड़ा हर्ष है कि आप ने वेदभाष्य के लिये बहुत से ग्राहक बना लिये हैं। कृपया उन सब ग्राहकों को जो मासिक अंक खरीदना चाहते हैं यह बता दें कि वे अपना चन्दा बनारस में मैसर्ज़ ई. जे. लजारस और कम्पनी मैडिकल हाल प्रेस, बनारस के पते पर भेज दें। विज्ञापन पत्र मूल्य बेचने के लिये नहीं हैं, परन्तु वेदभाष्य की ग्राहक संख्या बढ़ाने मात्र के लिये हैं। सो अपने उन मित्रों और पड़ौसियों को दिखा वा दे दें कि जिन के वेदभाष्य के ग्राहक बनने की सम्भावना है। ई. जे. लजारस और कम्पनी, जो रुपया उन्हें भेजा जायगा, उस की रसीद भेजेंगे। परन्तु सब ग्राहकों को उन से (मैसर्ज़ ई. जे. लजारस और को से) अंक प्राप्त करने के लिये अपना २ शुद्ध पता भेजना चाहिये।

---

* पूर्व पत्र के साथ ही यह पुनर्लेख मिलता है।

मैं आशा करता हूं कि ग्राहक संख्या बढ़ाने में आप अपना पूर्ण यत्न करते रहेंगे। आशा है आप सपरिवार आनन्द में होंगे। मैं यहां १५ तारीख तक रहूंगा और फिर यहां से शाहजहांपुर को जाऊंगा। शीघ्र उत्तर कृतार्थ करेगा। वेदभाष्य का वार्षिक चन्दा ४।।) मात्र है।

आपका शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

कृपया कुल ग्राहक संख्या जो आप ने लखनऊ से अभी तक एकत्र की है मुझे लिखें। मैंने अपनी सूची में आप के नाम के आगे भेजने को पांच प्रतियां लिखी हैं और अन्य लोग वार्षिक चन्दा ४।।) भेजने पर और ले सकते हैं।

दयानन्द सरस्वती

---

(३) (११८)

Meerutt.
13/2/77

My dear Sir,

I reced:–yours dated 9th inst and in its reply I feel much pleasure to send you here-with ten more copies of Bigiapan-Patters as you wished to be distributed there.

Well done, my dear, why you not do so? Let Sanskar-Biddhee come from Bombay, as soon expected, and then not only one, but ten or fifteen copies will be sent to you without fail.

I will leave Meerutt on the 15th of this month for Saharan-pore and so your answer should reach me there and not here. Hoping you are well with your family.

Yours well wisher
Swamee Dayanand Sarusswatti
Sd. दयानन्द सरस्वती
मेरठ, १३–२–७७

मेरे प्रिय महाशय!

आप का पत्र तारीख ९ का मिला, उस के उत्तर में, जैसा आप ने वहां बांटने को चाहा था, मैं विज्ञापन पत्र की १० दश और प्रतियां भेजने में बहुत प्रसन्न हूं।

मेरे प्रिय आप ने बहुत अच्छा किया, भला आप ऐसा क्यों न करेंगे ? जैसा कि शीघ्र आशा है, संस्कारविधि मुम्बई से आ जाय और तब एक नहीं, परन्तु दश या पन्द्रह प्रतियां विना देरी आप को भेजी जायंगी ।

मैं इस मास की १५ तारीख को मेरठ से सहारनपुर जाऊंगा और इस लिये आप का पत्र मुझे वहां मिलना चाहिये और यहां नहीं। आशा है आप सपरिवार आनन्द में होंगे ।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(४)

(११९)

Saharun-pore
28/2/77

My dear Pundit.

I am very glad to inform you that I will now visit the Chanda-pore Religious Fair situating in Rohelcund Shajahan-pore District, where, I have been repeatedly invited by the Fair-Proprietors and others. The fair has been founded for assembling and collecting all the Religious Philosophers of India to enquire from, what is the God's true Religion to be followed for Salvation. I will leave Saharanpore by the 11th March and reach the fair-place on the 15th and so you are expected to join the Fair which will stop for a week (being postponed from 3 days to a week) with all your friends, who wish to come there. The fair will be most interesting and worthy to be seen and a great many Pundits, Moulvees and Padrees from all parts of India will attend and beautify it indeed. Hoping you are well with your children. Have you now recd/ full required copies from Benares. An early answer will ever oblige.

Yours well wisher
Swami Dayanand Sarusswati.
Sd. दयानन्द सरस्वती

To.
Pdt. Ramadhar Bajpayee
Lucknow.

सहारनपुर
२८-२-७७

मेरे प्रिय पण्डित !

मैं आपको यह बताने में बड़ा प्रसन्न हूं कि मैं अब चान्दापुर धार्मिक मेले में जाऊंगा, जो कि रुहेलखण्ड जिला शाहजहांपुर में है, और जहां कि मेले के अध्यक्षों और दूसरों से मैं बारम्बार निमन्त्रित किया गया हूं। यह मेला आर्य्यावर्त के सब धार्मिक दार्शनिकों को एकत्र करने के लिये बुलाया गया है, और उन से पूछा जायगा कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये परमात्मा का सत्य धर्म्म कौनसा है ? मैं ११ मार्च को सहारनपुर से चलूंगा और मेला स्थान पर १५ को पहुंचूंगा और इसलिये आप को भी अपने सब मित्रों के साथ जो आना चाहते हैं, मेले में आना चाहिये जो कि एक सप्ताह तक रहेगा (३ दिन से एक सप्ताह के लिये हो गया है)। मेला बड़ा रूचिकर और देखने योग्य होगा और बहुत से पण्डित, मौलवी और पादरी भारत के सब भागों से आयेंगे और निश्चय ही इसे सुशोभित करेंगे। आशा है आप स्वसन्तान सहित आनन्द में होंगे। क्या आप को अब बनारस से अभीष्ट प्रतियां मिल गई हैं ? शीघ्र उत्तर कृतार्थ करेगा।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(५) (१२०)

Saharan-pore
9/3/77

My dear Pundit

I am in receipt of your letter D/ 6/3/77 and in its reply I am happy to inform you that the five more copies of Veda Bhashya have been sent to you with my permission and Messrs. E. J. Lazarus is not in mistake this while. Please distribute them among the subscribers about whom you had written to me some days ago. I will reach Chanda-pur Fair on the 15th inst, which will now continue to stop for a whole week from 19th inst. Please let me know how many Sanskar Biddhis you require and address me after the 11th Chanda-pore Fair and not Saharun-

pore which I will leave for, on the said date. Please accept best Asheer-bad and see the Fair, if possible.

Yours well wisher
Sd. Swami Dayanand Sarusswati
दयानन्द सरस्वती

P. S. You can send the subscription money for the five more copies you *recd* twice to the Medical Hall Press Benares, with addresses.

सहारनपुर
६-३-७७

मेरे प्रिय पण्डित !

आप का ६-३-७७ का पत्र मिला और उस के उत्तर में मैं यह प्रसन्नता से लिखता हूं कि आप को वेदभाष्य की पांच और प्रतियां भेज दी गई हैं और अब के मैसर्ज़ इ. जे. लजारस ने अशुद्धि नहीं की। कृपया उन्हें उन ग्राहकों में बांट दीजिये जिन के कि विषय में आप ने कुछ दिन पहले मुझे लिखा था। मैं इस मास की १५ तारीख को चांदापुर पहुंचूंगा जो कि अब १६ तारीख से लेकर पूरा एक सप्ताह रहेगा। कृपया लिखें कि आप को कितनी संस्कारविधियों की आवश्यकता है और ११ के पीछे मुझे चांदापुर मेले के पते से लिखें और सहारनपुर नहीं, जहां से मैं उक्त तारीख को चला जाऊंगा। कृपया मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें और यदि सम्भव हो तो मेला देखें।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

पु० नि० जो पांच अधिक प्रतियां आप को दुबारा पहुंच गई हैं उन का चन्दा पता सहित मैडिकल हाल प्रेस बनारस को भेज दें।

---

(६) (१२१)

Lahore
15th May 1877

My dear Pundit.

I duly received your both letters and understood all the

particulars stated therein. The reason I could not answer you was that the books required by you were not ready in my hand to despatch and so I waited to receive them all the while till this date.

I have got now some of them, however, though in very limited number and can send you a few copies whatever I have with me, on your informing me how many books of *Suttiarth-Perkash* and *Aryabhi-Binoi* etc. will suffice you, to be sold for ready payment because I also stand in need of money in my visiting places and at least fifty copies are required for Lahore and Amritsar.

Please send me an estimate of books, necessarily required for your *Sabha* and then I will send you some copies indeed.

May *Permatma* bless your object of establishing *Satya-Niropan-Sabha,* which is expected to bring forth good fruit for the public. Hoping you are well with your friends. Accept my Asheerbad.

Yours well wisher
Pundit Swami Dayanand Sarusswatti
Sd/ दयानन्द सरस्वती
लाहौर
१५ मई, १८७७

मेरे प्रिय पण्डित !

मुझे आप के दोनों पत्र समय पर प्राप्त हुए और उन में लिखा सब समाचार विदित हुआ। मेरे उत्तर न देने का कारण यह है कि आप से मांगी गई पुस्तकें मेरे पास भेजने को तय्यार न थी और इस लिये मैं आज तक उन की प्राप्ति की प्रतीक्षा में रहा।

मुझे अब उन में से कुछ मिल गई हैं, आप का पता आने पर कि सत्यार्थप्रकाश और आर्याभिविनय की कितनी पुस्तकें आप के लिये पर्याप्त होंगी, मैं उन्हीं में से कुछ प्रतियां आप को भेज सकता हूं। आप उन का मूल्य तत्काल प्राप्त करें क्योंकि मुझे भी नये स्थानों में जाने के लिये धन की आवश्यकता है और कम से कम लाहौर और अमृतसर के लिये पचास प्रतियां चाहियें।

कृपया जितनी पुस्तकें आप की सभा के लिये असावश्यक हैं उन का अनुमान मुझे भेजें और तब निस्सन्देह मैं आप को कुछ प्रतियां भेजूंगा।

परमात्मा आप के सत्य-निरूपण–सभा के स्थापन के उद्देश्य को फलीभूत करें। इस से जनता के बड़े लाभ की आशा है। आशा है आप स्वमित्रों सहित आनन्द में होंगे। मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(७) (१२२)

Lahore
8th June 1877

My dear Pundit

Please let me know whether you require some more copies of *Sanskar-Biddhi* or *Suttiarth-Parkash* for your *Sabha* as you requested once before. Have you recovered the price of twenty *Sanskar-Biddhis* and have you sold all of them to the people ?

The other books are not ready with me but when come to hand, you will be informed atonce. Successful lectures are going on here every day and with good cousequence. Hoping you are well with your children. Accept my *Asheerbad.*

Yours well wisher
Pundit Swami Dayanand Sarusswatti
Sd/ दयानन्द सरस्वती

लाहौर
८ जून १८७७

मेरे प्रिय पण्डित !

कृपया मुझे बताएं कि जैसा आप ने पूर्व एकवार लिखा था, क्या आप अपनी सभा के लिये संस्कारविधि या सत्यार्थप्रकाश की कुछ और

प्रतियां चाहते हैं ? क्या आप ने बीस संस्कारविधियों का मूल्य प्राप्त कर लिया है और क्या आप ने वे सब लोगों को बेच दी हैं ।

दूसरे पुस्तक मेरे पास तय्यार नहीं हैं, पर जब आ जायंगे, तो आप को तत्काल सूचना दी जायगी । यहां प्रति दिन व्याख्यान बड़ी सफलता से हो रहे हैं । उन का परिणाम अच्छा होगा । आशा है आप स्वसन्तान सहित अच्छे हैं । मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें ।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(८) (१२३)

Jullundher
2nd October 1877

My dear Pandit

I believe you might have received one hundred copies of Aryodesh Ratun Malla from Umrit-Sar which according to my permission had been sent to your address by Munsookh Rai of Arya Samaj.

Please acknowledge them, if received duly and inform me of your sound health.

Daily lectures are given here and hope they will end with fair result. I will stop here about 9 or 10 days more and then visit next place or perhaps Lahore once more.

You can address me Jullundher city to the care of Sirdar Bikraman Singh of Kapoorthala wala. Please accept my *Asheerbad* The said copies are to be sold at one and half annas each.

Yours well wisher
Pandit Swami Dayanand Sarusswatti
Sd. दयानन्द सरस्वती

Vedas Bhomika has now come to its end nearly and the text is to be commenced soon.

जालन्धर
२ अक्तूबर १८७७

मेरे प्रिय पण्डित !

मैं विश्वास करता हूं कि अमृतसर से आर्य्योद्देश्यरत्नमाला की एक सौ प्रतियां आप ने प्राप्त की होंगी जो कि मेरी आज्ञानुसार आर्य्य समाज के मनसुखराय ने आप के पते पर भेजी हैं।

कृपया उन्हें स्वीकार करें, यदि वे समय पर मिलें और अपने अच्छे स्वास्थ्य से मुझे सूचित करें।

यहां व्याख्यान प्रतिदिन होते हैं और आशा है कि अच्छे परिणाम के साथ समाप्त होंगे। मैं यहां ९ या १० दिन तक और ठहरूंगा और पुनः अगला स्थान देखूंगा या कदाचित् फिर लाहौर जाऊं।

आप मुझे कपूरथला के सरदार विक्रमासिंह द्वारा जलन्धर नगर के पते से लिख सकते हैं। कृपया मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें। पूर्वोक्त प्रतियां प्रति पुस्तक डेढ़ आना के हिसाब से बेचनी हैं।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

वेदभाष्यभूमिका अब लगभग समाप्ति को आ रही है और वेद शीघ्र ही आरम्भ किया जायगा।

---

(९)

(१२४)

Jehlum
27th Decr. 1877

Dear Pandit jee

I recd/ your delightful letter of the 22nd inst, this morning and am extremely glad to read all the particulars stated therein.

I have arrived at Jehlum to-day the 27th current and intend to stop here about a fortnight at least. You can remit the money to me freely according to my above shown address, remarking to the care of Post Master only but please don't send me tickets as you did before, because I find some difficulty in changing or getting money for them. Better send currency Notes

or Money-order, which are both safest ways indeed. Hoping you are well and rejoicing—

Yours well wisher
Pandit Swami Dayanand Sarusswati.
Sd. दयानन्द सरस्वती

जेहलम
२७ दिसम्बर १८७७

मेरे पण्डित जी !

आप का २२ तारीख का आनन्ददायक पत्र आज प्रातः काल मिला और उस की सब बातों को पढ़कर मुझे असन्त आनन्द हुआ ।

मैं आज २७ तारीख को जेहलम पहुंचा हूं और कम से कम यहां पन्द्रह दिन तक रहने का विचार रखता हूं । आप मुझे उपरिलिखित पते पर केवल पोस्ट मास्टर द्वारा लिख कर खुले तौर पर रुपया भेज सकते हैं, परन्तु पूर्ववत् मुझे टिकट न भेजें, क्योंकि उन के बदलवाने या उन के स्थान में रुपया लेने में मुझे कष्ट होता है । अच्छा है कि कर्रन्सी नोट या मनीआर्डर भेजें जो निश्चय ही दोनों असन्त सुरक्षित प्रकार हैं । आशा है, आप अच्छे और प्रसन्न होंगे ।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(१०) (१२५)

Jhelum
28/12/77

Dear Pandit jee,

Please tell me, how many copies of Sandhio-Pasan you wish to have for sale in Lucknow ? These are the best copies with good translation in *Deva-Nagri Bhashya* paragraph by paragraph one after the other orderly in improved and enlarged edition. The average price per copy has not been fixed as yet, because the said book in still under Press, but on its coming out, every thing will be settled and decided with good will.

However I can suggest you so much that the price would be under half rupee per copy. And this would be an excellent work for the Arya-people indeed.

It is raining here since yesterday evening, so heavily that in the *Kothi* where I am sitting now and writing this letter to you, is all leaking over, except a few hands of floor inside.

Hoping you are well and rejoicing.

Yours well wisher
Pandit Swami Dayanand Sarusswatti.

Sd/ दयानन्द सरस्वती

जेहलम

२८-१२-७७

प्रिय पण्डित जी !

कृपया मुझे बताएं कि लखनऊ में विक्री के लिये आप सन्ध्योपासन की कितनी प्रतियां चाहते हैं ? यह सर्वोत्तम प्रतियां हैं । अनुवाद अच्छा है । और एक के पीछे दूसरे प्रत्येक वाक्य का क्रमशः देवनागरी में भाष्य है । यह संस्करण संशोधित और परिवर्धित है ।

प्रति पुस्तक का अनुमान से मूल्य अभी नहीं रखा गया, क्योंकि पूर्वोक्त पुस्तक अभी यन्त्रालय में है, पर इस के निकलने पर प्रत्येक बात शुभ भाव से स्थिर और निश्चित की जायगी ।

फिर भी मैं आप को इतना बता सकता हूं कि मूल्य प्रति पुस्तक आठ आने से कम होगा, और यह निस्सन्देह आर्य्यों के लिये अत्युत्तम पुस्तक होगा । कल सायंकाल से यहां इतने जोर से वर्षा हो रही है कि जिस कोठी में मैं अब बैठा हूं और आप को यह पत्र लिख रहा हूं, अन्दर दो चार हाथ छोड़ कर सब स्थानों से चो रही है ।

आशा है आप अच्छे और प्रसन्न होंगे ।

आपका शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(११) (१२६)

Jhelum
6th January 1878

Dear Pandit jee

Received your letter of the 3rd. inst enclosing a currency Note for Rs. 10, ten only which I accepted with thanks. Nothing is new here worthy to be stated, but I hope sincerely that an Arya-Samaj will also be made here within a short time. Hoping you are well with your children. Please accept my best *Asheerbad.*

Yours well wisher
Pandit Swami Dd. Saruswatti
Sd. दयानन्द सरस्वती

जेहलम
६ जनवरी, १८७८

प्रिय पण्डित जी !

आप का ३ तारीख का पत्र जिस में १० रुपये का कर्रन्सी नोट था, मिला। उस का धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया। यहां लिखने योग्य कोई नया समाचार नहीं है। परन्तु मैं शुद्ध हृदय से आशा करता हूं कि थोड़े ही काल में यहां भी एक आर्य्यसमाज बनाया जायगा। आशा है आप स्वसन्तान सहित कुशलपूर्वक होंगे। कृपया मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(१२) (१२७)

Jhelum
4th January 1878

Dear Pandit jee

The Sandhio Pasan Panch Maha Juggya Bidhi with easy translation in Bhasha, is now ready in its completion for use and you will soon get 100, one hundred copies of it from Benares Press within a short time.

The price per copy has been published on their covers and if you wish to have more of them, you can be furnished with, in required number on your further request. I believe you would have recd/ my other letters also in due time. Hoping you are well with your children and family.

Yours well wisher
Pandit Swami Dd. Sarusswatti
Sd/ दयानन्द सरस्वती

Address me Jhelum city to the care of Post Master only.

जेहलम
४ जनवरी, १८७८

प्रिय पण्डित जी !

सन्ध्योपासन पञ्चमहायज्ञविधि भाषा में सरलार्थ युक्त अब काम आने के लिये तय्यार हो गई है, और आप को इस की १०० एक सौ प्रति शीघ्र ही बनारस प्रेस से पहुंचेगी।

मूल्य प्रति पुस्तक का उन के मुखपृष्ठ पर छाप दिया गया है, और यदि आप को अधिक की आवश्यकता हो, तो आगे पत्र आने पर अभीष्ट संख्या में भेजी जा सकती है। मैं विश्वास करता हूं कि मेरे दूसरे पत्र भी आप को उचित समय पर मिल गये होंगे। आशा है आप सपरिवार कुशल सहित होंगे।

आप का शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

मुझे केवल इस पते से लिखें—
पोस्टमास्टर द्वारा जेहलम नगर।

---

(१३) (१२८)

Gujrat
14th January 1878

Dear Pandit jee

Your welcome note of the 9th inst duly came to hand and I understood all what you stated therein.

Your good wishes for learning the Veda Bhashya's subscription for the current year will soon be fulfilled. The only delay is that with the consent of the Bombay people I am now making some better arrangements for the Bhashya's publication both in paper and type. All this will soon be finished with united efforts of us and a notice will be given in the 11th or 12th part of the Veda Bhashya for the public information on the matter. The subscription for this year is surely to be fixed with some reduction and the people would be able to buy one or both numbers of the Rig and Yaju easily.

I dare say, that all the subscribers for this year would be fully satisfied to find good paper and fine order of interpretation, which are very necessarily recquired to discover the real sense of the Mantras. On my returning from the Punjab, I will tell you whether and what time I will be able to visit Lucknow but it would be done so sooner or latter once again certainly. Hoping you are well and rejoicing. Accept my best *Asheerbad* and believe me your ever well wisher.

Pandit Swami Dd. Sarusswatt.

Sd/ दयानन्द सरस्वती
गुजरात
१४ जनवरी, १८७८

प्रिय पण्डित जी !

आप का ६ तारीख का शुभ समाचार उचित समय पर मिला और आप का लिखा सब विषय समझा।

प्रचलित वर्ष के लिये वेदभाष्य का चन्दा जानने की आप की शुद्ध भावना शीघ्र पूर्ण की जायगी। देरी केवल इस बात की है कि मुम्बई के लोगों की सम्मति से मैं अब भाष्य के छपने का, कागज और टाइप दोनों की दृष्टि से, अच्छा प्रबन्ध कर रहा हूं। हम सब के इकट्ठे परिश्रम से यह सब शीघ्र समाप्त होगा, और इस विषय पर जनता के ज्ञान के लिये वेदभाष्य के ११वें वा १२वें अंक में एक विज्ञापन दिया जायगा। इस वर्ष का चन्दा निस्सन्देह कुछ घटा कर रक्खा जायगा, और लोग सरलता से ऋग् या यजुः के एक या दो अंक खरीद सकेंगे।

मैं निश्चय से कहता हूं कि इस वर्ष के सब ग्राहक अच्छा कागज और भाष्य का सुन्दर क्रम देख कर, जो मन्त्रों के यथार्थ अर्थ जानने के लिये बड़ा आवश्यक है, पूर्ण सन्तुष्ट होंगे। पंजाब से लौट कर मैं आप को लिखूंगा कि क्या मैं लखनऊ देख सकूंगा और कब देख सकूंगा, पर यह आगे या पीछे एक बार फिर निश्चय ही होगा। आशा है आप अच्छे और आनन्द में होगें। मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें और मुझे जानें—

अपना शुभचिन्तक
ह० दयानन्द सरस्वती

---

(१४) (१२९)
नं० ३७७

पंडित रामाधार वाजपेई जी आनंद रहो!

विदित हो कि आपको लिखते हैं कि आपके पास जो रुपया जमा है वा किसी ग्राहक से वसूल हो और पुस्तकादि के मूल्य की बाबत जो हो और सब ग्राहकों से रुपया वसूल करके मेरठ के पते से हमारे पास भेज दो क्योंकि हम को रुपये की बहुत ज़रूरत है और इसी कारण आपको लिखा है कि जल्दी कुल रुपया हमारे पास भेज दो और यह भी लिखो कि स्वामी गंगेश आज कल कहां हैं॥ उत्तर शीघ्र भेज दीजिये॥

२ सितंबर १८७८ — हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती मेरठ

---

(१५) (१३०)
५८८

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनंद रहो!

विदित हो कि आपकी एक चिट्ठी मेरठ में आई थी सो आपने लिखा था कि हम पुस्तकों का रूपया भेजेंगे परंतु अब तक नहीं भेजा इस लिये आपको लिखते हैं कि आप बहुत जल्दी हुंडी बनवा कर हमारे पास यहां दिल्ली में भेज दीजिये। आवश्यकता के कारण से आपको लिखा गया

है। और मेरठ में समाज होने तथा वहां से दिल्ली को गमन करने का समाचार आपको पहिले पत्र में लिख चुके हैं ॥

हम बहुत आनन्द में हैं ॥*

हस्ताक्षर
दयानन्द सरस्वती

---

(१६) (१३१)
६२६

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनंद रहो !

विदित हो कि पत्र आपका आया सब हाल मालूम हुआ हुंडी ४६) की अभी हमारे पास नहीं पहुंची शायद कल वा परसों आ जावेगी तब्ही आपके पास रसीद भेजी जावेगी ॥, और ७ ऋग्वेद और छः यजुर्वेद आपके पास भेजने के लिये मुंबई को लिख दिया है वहां से जल्दी आपके पास पहुंचेंगे और आगे से बराबर पहुंचा करेंगे ॥,

और केवल भूमिका ५) को मिल सकती है ॥, और जो ग्राहक लोग ४॥) गत वर्ष में दे चुके और भूमिका पर्य्यंत लेकर छोड़ते हैं उन से ॥) और वसूल कर लो, और जो केवल एक वेद लेते हैं उन से ४) लेने चाहियें ॥, और जो ग्राहक पिछले साल में ४॥) दे चुके और इस वर्ष में दोनों वेद लेना चाहते हैं उन से ७) और जो एक वेद लेते हैं उन से ४) वसूल करो॥, जो नवीन ग्राहक हों और वे दोनों वेद भूमिका सहित लेवें उन से ११॥) और जो भूमिका सहित एक वेद लेवें उन से ८॥) और जो केवल एक वेद लेवें उन से ४) वसूल कीजिये ॥, यहां पर आज कल नित्य व्याख्यान होता है ॥ हम आनंद पूर्वक कुशल क्षेम से हैं ॥

२० अक्टूबर ७८ दयानन्द सरस्वती

---

* पं० रा० बा० ने लाल रंग से १५ अक्तूबर १८७८ की तारीख स्वामी जी से इस पत्र के चलने की लिखी है।

(१७)
६२७.
(१३२)

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनंद रहो ॥,

विदित हो कि आज आप का भेजा हुआ मनी आर्डर ४६) का पहुंच गया है आप खातिर जमा रक्खें, और बाकी रूपया भी जल्दी ही भेज देना क्योंकि रुपये की आज कल बहुत आवश्यकता है ॥

और यह भी लिखना चाहिये कि कितना रुपया किस पुस्तक का है वा किस ग्राहक के नाम छपना चाहिये, और ७ ऋग्वे० और छः यजु० आप के पास मुंबई से पहुंचेंगे, वहां को लिख दिया गया है ॥, यहां पर व्याख्यान नित्य होता है और हम बहुत आनंद में हैं ॥

२३ अक्टू० १८७८ } हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती दिल्ली {

---

(१८)
६३२
(१३३)

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनंद रहो !

विदित हो कि एक पत्र इस से पाहिले आप के पास भेजा गया है पहुंचा होगा, अब इस चिट्ठी के भेजने की आवश्यकता यह है कि आप ने पत्र में लिखा था कि ४६) की हुंडी दूसरे लिफ़ाफ़े में भेजी है सो आज तक हमारे पास नहीं पहुंची सो जानना और सब प्रकार से आनंद है ॥

२२ अक्टूबर ७८ } हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती दिल्ली {

---

(१९)
(१३४)

Benares
The 24th Nov. 1879

Babu Rámádhár, Bajpaye,

May you prosper ! I returned from Dáná-pore and have lodged now-a-days in the garden of His late Highness the Maharajah of Vizianagram, at Benares. I will write for the books about which you told me, to Bombay and Morádábád. You will try your best to treat in a friendly manner the son of Munshi

Indra-Man, named Narayan Dás, who wishes to go to Lucknow from Morádá-bad in the search of a copy-writer on a printed lithographic paper, you will procure for him such a writer if you can find one,—for such a writer is urgently required.

{ दयानन्द सरस्वती }
काशी ॥

बनारस
२४ नवं० १८७६

बाबू रामाधार वाजपेई आनन्द रहो !

मैं दानापुर से लौटा हूं और बनारस में स्वर्गवासी श्री महाराजे विजयनगर के बाग में आजकल ठहरा हूं। जिन पुस्तकों के लिये आप ने मुझे कहा था, उन के लिये मैं मुम्बई और मुरादाबाद को लिखूंगा। मुन्शी इन्द्रमन के पुत्र नारायणदास को मित्रवत् रखने में आप अपना पूर्ण यत्न करेंगे। वह मुरादाबाद से छपे हुए लिथो कागज पर कापी लिखने वाले की खोज में लखनऊ जाना चाहता है। यदि ढूंढ सकें तो उस के लिये ऐसा लेखक निकालें, क्योंकि ऐसे लेखक की असन्तावश्यकता है।

[दयानन्द सरस्वती]
काशी ॥

---

(२०) (१३५)

पोस्ट कार्ड ओ३म्

वाजपेई रामाधार जी आनंदित रहो !

विदित हो कि आज हम ने वैदिक यंत्रालय प्रयाग मैनेजर दयाराम को लिख भेजा है सो आप का हिसाब सफा हो जायगा अब आगे को गड़बड़ न होगा। देखिये यह परोपकार का काम है इस में सब बात के प्रबन्धकर्त्ता आप ही को रहना चाहिये आप अपनी ओर से चाहें जिस को रक्खें परन्तु प्रधान आप ही समझे जायंगे। अब आप इस पुराने हिसाब की सफाई करके नया हिसाब का आरंभ कीजिये फिर गड़बड़ कभी नहीं

हो सकेगी ॥ हम यहां सहर मुंबई वालकेश्वर गोशाला के बंगल में ठहरे हैं यहां गोरक्षा के विषय में व्याख्यान होते हैं ॥
ता० २० फर्वरी सन् १८८२ ई० [दयानन्द सरस्वती]

---

(२१) (१३६)

My dear friend,

My friend M. Indermuni requires the address of M. Hurprasad, the copy-navis. I hope you will send it to him as soon as possible.*

Yours ever
Swamee Diyanund Sarusswatti.

मेरे प्रिय मित्र !

मेरे मित्र मुन्शी इन्द्रमन, म० हरप्रसाद कापी नवीस का पता चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि आप उन्हें यथासम्भव यह शीघ्र भेज देंगे।

आप का
स्वामी दयानन्द सरस्वती

रामाधार वाजपेई जी आनन्दित रहो *

मुंशी जी ने जो पत्र तुम्हारे पास भेजा उसका उत्तर क्यों नहीं दिया जो २ पूछे वा मंगवावे उसी समय उत्तर भेज दिया करो। यहां व्याख्यान खूब हो रहे हैं। पादरी इस्काट साहब से तीन दिन भर बहस हुई उनकी विरुद्ध बातें सब कट गई सो जब छपेगा तब तुम्हारे पास भी भेजा जायगा। और यहां से चार पांच दिन के पीछे शाजहांपुर आकर वहां कुछ ठहर कर तुमको लिखेंगे। जैसा मकान हमारे रहने के लिये किया है वैसा ही व्याख्यान के लिये भी एक मकान शहर में कर रक्खो क्योंकि हमारा ठहरना अब थोड़ा २ ही होगा।

ता० २९ अगस्त। { दयानन्द सरस्वती }

---

* यह दोनों लेख एक ही पत्र पर हैं।

(१) (१३७)

ओम् नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय।

॥ विज्ञापनपत्रमिदम् ॥

॥ श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृतम् ॥

॥ वेदभाष्यप्रचारार्थं विज्ञेयम् ॥

इदं वेदभाष्यं संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां भूषितं क्रियते। कालरामाङ्कचंद्रेब्दे भाद्रमासे सिते दले। प्रतिपद्यादित्यवारे भाष्यारम्भः कृतो मया ॥ १ ॥ तदिदमिदानीं पर्य्यन्तं दशसहस्रश्लोकप्रमितं तु सिद्धं जातम्। तच्चेदं प्रत्यहमग्रेग्रे न्यूनान्न्यूनं पंचाशच्छ्लोकप्रमितं नवीनं रच्यतएवमधिकादधिकं शतश्लोकप्रमाणं च। तच्च वाराणस्यां लाजरसकंपन्याख्यस्य यंत्रालये प्रतिमासं मासिकपुस्तकवद्यन्त्रितं कार्य्यते मासिकस्य मूल्यमेतावत् ।−) इदं द्वादशमासानां मिलित्वैतावद्भवति ३॥) इदं राजमार्गवेतनदानेन सहैतावन्मात्रं ४॥) वार्षिकं जायते। अस्य वेदभाष्यस्य ग्रहणेच्छा यस्य भवेत् स लाजरसकंपन्याख्यस्य वा भाष्यकर्त्तुः श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनः समीपं वार्षिकं धनं ४॥) प्रेषयेत्तस्य समीपमेकवर्षपर्य्यंतं प्रतिमासं मासिकपुस्तकं पोष्टाख्यराजमार्गप्रबन्धेनावश्यमागमिष्यति ॥ पुनर्ग्राहकैर्वार्षिकं देयं चैवमेव पुनःपुनर्ज्ञेयम्। योस्य वार्षिकं मूल्यं प्रेषयिष्यति तन्नामलेखपूर्वकं मासिकपुस्तकपृष्ठोपरि यन्त्रयित्वैकवारं प्रसिद्धं भविष्यतीदमेव तस्य विश्वासार्थं भविष्यति मद्धनं तेन भाष्यकर्त्रा वा यन्त्रणकर्त्रा प्राप्तं चेति ॥ अत्रान्यथा यः कुर्यात्तस्य समाधाता स एव भविष्यति ॥ सर्वशक्तिमदीश्वरानुग्रहेणात्र व्यत्ययः कदाचिन्नैव

भविष्यतीति विज्ञायते ऽस्माभिः। एकरौप्यमुद्रया श्लोकसहस्रद्वयप्रमितं न्यूनान्न्यूनमुत्तमपत्रात्तरलालितदर्शनं हृद्यं पुस्तकं ग्राहकाः प्राप्स्यंत्येव। इदं वेदभाष्यमपूर्वं भवति। कुतः। महाविदुषामार्य्याणां पूर्वजानां यथावद्वेदार्थविदामाप्तानामात्मकामानां धर्म्मात्मनां सर्वलोकोपकारबुद्धीनां श्रोत्रियाणां ब्रह्मनिष्ठानां परमयोगिनां ब्रह्मादिव्यासपर्य्यंतानांमुन्यृषीणामेषां कृतीनां सनातनानां वेदाङ्गानामैतरेयशतपथसामगोपथब्राह्मणपूर्वमीमांसादिशास्त्रोपवेदोपनिषच्छाखन्तरमूलवेदादिसत्यशास्त्राणां वचनप्रमाणसंग्रहलेखयोजनेन प्रत्यक्षादिप्रमाणयुक्त्या च सहैव रच्यते ह्यतः। वेदानां यः सत्यार्थः सोनेन भाष्येण सर्वेषां सज्जनानां मनुष्याणामात्मसु सम्यक् प्रकाशी भविष्यति। पुनरनर्थव्याख्यानानि यानि वेदानामुपरि वर्त्तन्ते तन्निवृत्तिरनेन च तत्प्रयुक्तभ्रमजालोपि लयं गमिष्यत्यवश्यमतश्च। ततो सत्यव्यवहारत्यागात् सत्याचारग्रहणप्रवृत्तिभ्यां मनुष्याणां महान् सुखलाभो निश्चितो भविष्यति वेदेश्वरयोः सत्यार्थसाम्राज्यप्रकाशश्चातः॥ सत्यधर्मार्थकाममोक्षाणां यथावत् सिद्धेश्चेत्यादयोस्य भाष्यस्यापूर्वत्वे हेतवो विज्ञेयाः॥ एतदर्थं सत्यविद्याप्रियैर्विद्वद्भिः सत्यार्थजिज्ञासुभिर्मनुष्योपकारसत्यविविद्योन्नतिं चिकीर्षुभीराजादिनृवर्य्यैरस्मिन्महति सर्वोपकारके कार्ये मासिकपुस्तकग्रहणेनान्यप्रकारेण च सर्वैर्यथाशक्त्यसहायः कार्य इति विज्ञाप्यते॥

॥ विज्ञापनपत्र॥

॥ भाषार्थ॥

सो यह दयानन्द सरस्वती स्वामीजी ने प्रसिद्ध किया है इस का

यह प्रयोजन है कि चारों वेदों का भाष्य करने का आरंभ मैंने किया है सो सब सज्जन लोगों को विदित हो कि यह भाष्य संस्कृत और आर्य भाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्य देश की है। इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इस में संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है और वैसी आर्यभाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसा सरल है कि जिसको साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा का पढ़ने वाला भी सहज में समझ लेगा। संवत् १९३३ भाद्रमास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के दिन इस भाष्य का आरंभ किया है सो संवत् १९३३ मार्गशिर शुक्ल पौर्णमासी पर्यन्त दश हजार श्लोकों के प्रमाण भाष्य बन गया है। और कम से कम ५० श्लोक और अधिक से अधिक १०० श्लोक पर्य्यन्त प्रति दिन भाष्य को रचते जाते हैं। इस भाष्य को काशी जी में लाजरस कंपनी के छापेखाने में छपवाते हैं। सो छापने का प्रबंध इस प्रकार से किया है कि मासिक पुस्तक की नाई छपता जायगा। इस का मासिक जो एक अंक होता है उस का मूल्य।-) पांच आना है सो बारह महिनों का मिलके ३।।।) पौनेचार रुपैये होते हैं। सो डाक का खर्च महिने महिने में -) एक आने का टिकट लगेगा सो मिल के एक वर्ष का ४।।) साढे चार रुपये होते हैं सो जिस किसी को इस पुस्तक के लेने की इच्छा हो वह लाजरस कंपनी के पास एक वर्ष का मूल्य भेज दे अथवा स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के पास भेज दे उस के पास महिने महिने में एक वर्ष पर्यन्त पोष्ट मार्ग से अर्थात् सरकारी डाक के प्रबन्ध से मासिक पुस्तक अवश्य पहुंचेगा। पुनः एक वर्ष के पीछे फिर भी दूसरे वर्ष का इसी प्रकार जमा करना होगा और गाहकों के पास इसी प्रकार से मास मास में पुस्तक पहुंचा करेगा सो जिस महिने में जो गाहक मूल्य भेजेगा। उस महिने के अथवा दूसरे महिने के अंक में उस का नाम लेख पूर्वक उस धन की पहुंच मासिक पुस्तक के पृष्ठ के ऊपर छपा के उस लेख द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध कर दिया जायगा सो एक वर्ष में एक का नाम एक बारही छपेगा। पुनः दूसरे वर्ष में भी इसी प्रकार से होगा। उस लेख को गाहक लोग अपने पास रख लें और यह निश्चय जान लें कि मेरा धन उस के पास पहुंच गया और जो पुस्तक देने वाला वा गाहक इस में अन्यथा करेगा वह

इस बात को पूरी करने वाला होगा। सो हम लोग निश्चय जानते हैं कि जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा है उस की कृपा से इस काम में विपरीतता कभी न होगी सो गाहक लोगों को एक रुपैये में २००० दो हजार श्लोक मिलेंगे सो इस में कागज और अक्षर अच्छे रहेंगे जो बांचने वाले और देखने वाले जिस को देख और बांच के प्रसन्न हों। सो यह वेदभाष्य अपूर्व होता है। अर्थात् अत्यंत उत्तम बनता है क्योंकि इस में अप्रमाण वा कपोल कल्पित लेख नहीं होता। जे बड़े विद्वान् आर्यावर्त्तवासी प्रथम हो गये हैं। जे वेदों के अर्थ को यथावत् जानते थे जे कि सत्यवादी जितेन्द्रिय और धर्मात्मा थे तथा जिन की बुद्धि में सब लोगों का उपकार करना ही रहता था जे कि वेदों में परम विद्वान् थे और जिन की निष्ठा एक अद्वितीय ब्रह्म में थी जे ब्रह्मा से लेके व्यासजी पर्यंत मुनि जे कि मननशील थे और ऋषि जे कि वेदमंत्रों के अर्थों को यथावत् जानने वाले थे उन के किये सनातन जे ग्रन्थ हैं शिक्षा कल्प व्याकरण निघण्टु निरुक्त छन्द और ज्योतिष ए वेदों के छः अङ्ग कहाते हैं तथा ऐतरेय शतपथ साम और गोपथ ए चारों वेदों के चार ब्राह्मण कहाते हैं तथा पूर्वमीमांसा वैशेषिक न्याय योग सांख्य और वेदांत ए छः शास्त्र कहाते हैं और चार उपवेद हैं आयुर्वेद जो वैद्यक शास्त्र है धनुर्वेद जो राजविद्या है गान्धर्व वेद जो गान शास्त्र है और अर्थ वेद जो शिल्पशास्त्र है ए चार उपवेद कहाते हैं तथा केन कठ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य तैत्तिरीय ऐतरेय* और मैत्रेयी ए दश उपनिषद् कहाती हैं ११२७ ग्यारह सै सत्ताईस वेदों की शाखा जे कि वेदों के ऊपर मुनि और ऋषियों के किये व्याख्यान हैं इन में से जितनी शाखा मिलती हैं और मूल वेद जे ऋक् यजुः साम और अथर्व वेद इन की जे चार मंत्र संहिता हैं ए ईश्वर कृत सनातन चार वेद कहाते हैं शिक्षा से लेके शाखान्तर पर्यंत वेद के जे सत्यार्थ युक्त व्याख्यान हैं जे कि ब्रह्मा से लेके व्यास जी पर्यंत ऋषि और मुनियों के किये हैं उन सनातन सत्य ग्रन्थों के वचनों का लेख प्रमाण से सहित और मूल वेदों के भी प्रमाणों से सहित यह वेद भाष्य रचा जाता है और प्रत्यक्षादि प्रमाणों की योजना भी इस में लिखी जाती है इस कारण से यह वेद भाष्य अपूर्व होता है और इस वेद भाष्य से वेदों का जो सत्य अर्थ वह सब सज्जन लोगों के आत्माओं में यथावत्

* यहां बृहदारण्यक और छान्दोग्य स्पष्ट ही रह गई प्रतीत होती हैं।

प्रकाशित होगा तथा वेदों के ऊपर लोगों ने मिथ्या जे व्याख्यान किये हैं उन की निवृत्ति भी इस भाष्य से अवश्य होगी और जो उन व्याख्यानों के देखने से मिथ्या जाल जगत् में प्रवर्त्तमान है सो भी इस भाष्य से नष्ट अवश्य हो जायगा इस कारण से भी यह वेदभाष्य अपूर्व होता है क्योंकि जब वेदों का सत्य अर्थ सब को विदित होगा तब मनुष्य लोग असत्य व्यवहार को छोड़के सत्य का ग्रहण और सत्य में ही प्रवृत्त होंगे इस के होने से मनुष्यों को सुख की प्राप्ति अवश्य होगी तथा वेद का सत्य अर्थ रूप जो राज्य और परमेश्वर का यथावत् प्रकाश रूप जो अखंड राज्य है सो भी इस भाष्य के होने से जगत् में यथावत् प्रकाशित होगा इस निमित्त से भी यह वेदभाष्य परमोत्तम होता है और जब इस वेदभाष्य को यथावत् विचार के उस के कहे प्रमाण से जे मनुष्य आचरण करेंगे उन को सत्य धर्म सत्य अर्थ सत्य काम और नित्य सुख रूप जो मोक्ष इन चारों पदार्थों की सिद्धि यथावत् प्राप्त होगी इस में कुछ संदेह नहीं बहुत लिखना बुद्धिमानों के लिये अवश्य नहीं किंतु इस वेदभाष्य को जब देखेंगे तब उनको ए सब बात देखने में आवेंहीगी और वेदों की भूमिका जो बनाई है उस को भी देखने से सज्जन लोगों के हृदयकमल अत्यंत आनंदित होंगे जिस से इन की प्रवृत्ति यथावत् हो इसलिये यह विज्ञापन किया जाता है कि जे सत्य विद्या के प्रेमी विद्वान् हैं तथा जे सत्य अर्थ के जानने की इच्छा करने वाले हैं तथा सब मनुष्यों को सत्य विद्या से सुख प्राप्त हो और सब मनुष्यों की बढ़ती हो इस उपकार की इच्छा करने वाले जे मनुष्य हैं उन राजाओं से लेके जे भृत्य पर्यंत और जे ऐश्वर्य युक्त और उत्तम मनुष्य हैं जो सब मनुष्यों का उपकार करने वाला वेदभाष्य का होना यह बड़ा कृत्य है इस में जितना जिस का सामर्थ्य हो उतना सहाय करना सब को उचित है सो सहाय दो प्रकार से होगा एक तो मासिक पुस्तकों के ग्रहण करने से और दूसरा इस के बनने और छपाने में धन और पंडितों के रखने में सहाय देने से होगा यही सब सज्जनों से विज्ञापन है कि अत्यंत प्रीति से इस कार्य में दो प्रकार का सहाय सदा करें ॥

भाष्यस्यापूर्वत्वे दृष्टान्ताः संक्षेपतोऽन्येपि लिख्यन्ते । तत्र सत्येष्वार्षेषु सनातनग्रन्थेषु रूपकाद्यलङ्कारेण सत्यविद्या-

प्रकाशिकाः प्रमाणयुक्तिसिद्धा अनुत्तमा बह्व्यः कथा लिखिताः सन्ति। तासां मध्याद्दिग्दर्शनवत्काश्चित्कथा अत्र वेदभाष्य-भूमिकायां मयोल्लिखिताः। यासामज्ञानादाधुनिकपुराणग्रन्थेषु भ्रान्त्या मनुष्यैस्ता अन्यथैव लिखिता उपदिश्यन्ते श्रूयन्ते च। तत्परीक्षार्थं संक्षेपतोऽत्रविज्ञापनपत्रेऽपि काश्चिल्लिख्यन्ते। तद्यथा। प्रजापतिर्वै स्वां दुहितरमभ्यध्यायद्दिवमित्यन्य आहु-रुषसमित्यन्ये तामृश्यो भूत्वा रोहितं भूतामभ्यैत्तस्य यद्रेतसः प्रथममुददीप्यत तदसावादित्यो ऽभवत्। एतरेयब्रा० पंचिका ३ अध्याय ३॥ प्रजापतिः सविता। शतप० काण्डे १० अध्यायः २॥ तत्र पिता दुहितुर्गर्भं दधाति पर्जन्यः पृथिव्याः॥ निरु० अध्याय ४ खं० २१॥ द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्। उत्तानयोश्चम्वो ३ र्योनिरन्तर-त्रापि तादुहितुर्गर्भमाधात्॥ निरु० अध्याय० ४ खंड २१॥ शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यङ्गाद्विद्वां ऋतस्य दीधितिं सपर्यन्॥ पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्जन्संशग्म्येन मनसा दधन्वे॥ ऋग् मंत्र-द्वयमिदम्॥ ज्योतिर्भाग आदित्यः॥ निरु०। अ० १२। खंड १॥

॥ भाषार्थ॥

इस भाष्य के अपूर्व होने में तीन कथा दृष्टान्त के लिये इस विज्ञापन पत्र में संक्षेप से लिखते हैं उनमें से एक यह कथा है कि जिसको श्रीमद्भा-गवतादि नवीन ग्रन्थों में बहुत विपरीत करके लिखी है जिस कथा को वेद विरोधी मत वाले नहीं जानके लोगों को मिथ्या बहका के अपने चेले कर लेते हैं। और जे वेद मत वाले हैं वे भी सत्य कथाओं के नहीं जानने से और मिथ्या कथाओंको सुनके भ्रान्त होके उनके चेले हो जाते हैं सो देखो चित्त देके कि कितना बड़ा भ्रम मनुष्योंको अज्ञानसे हुआ है (प्रजापतिर्वै०)

प्रजापति नाम है सूर्य का क्योंकि सब प्रजा का जो पालन होना उसका मुख्य हेतु सूर्य ही है। उसकी दो कन्या हैं। एक द्यौः अर्थात् प्रकाश और दूसरी उषा जो चार घड़ी रात्रि रहने से प्रातः काल पूर्व दिशा में किंचित्प्रकाश होता है क्योंकि जो जिस्से उत्पन्न होता है वह उसका संतान कहाता है सो इन दोनों का पिता की नाईं सूर्य है और उन दोनों को सूर्य की कन्या की नाईं समझना उषा जो सूर्य की कन्या उस में पिता जो सूर्य उसने अपना किरण रूप वीर्य को डाला उन दोनों के समागम से यह जो आदित्य अर्थात् प्रकाश मय दिन है यह एक पुत्र उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ तथा इसी प्रकार से पर्ज्जन्य जो मेघ है सो पिता स्थानी है और पृथिवी उसकी कन्या स्थानी है क्योंकि जल से पृथिवी की उत्पत्ति होती है इससे ए दोनों पिता पुत्रवत् हैं सो अपनी कन्या जो पृथिवी उसमें मेघ जो पिता वह वृष्टिद्वारा जल रूप वीर्य को डालता है इन दोनों के परस्पर समागम से गर्भ धारण होने से अन्न ओषधि और वृक्षादि अनेक पुत्र उत्पन्न होते हैं यह पिता और दुहिता की रूपकालंकार कथा से उत्तम विद्या का अत्यंत प्रकाश होता है इस उत्तम कथा को बिगाड़ के अज्ञानी लोगों ने बुरी प्रकार से लिखी है ॥२॥ दूसरी यह कथा है जिसको बहुत प्रकार से लोगों ने पुराणों में बिगाड़ के लिखी है॥

इन्द्रागच्छेति गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेति तद्यान्येवास्य चरणानि तैरेवैनमेतत्प्रमुमोदयिषति रेतः सोमः शतपथ० कांड० ३। अ० ३ रात्रिरादित्यस्यादित्योदयेन्तर्धीयते नि० अ० १२ खं० ११॥ सूर्यरश्मिश्चंद्रमागन्धर्व इत्यपि निगमो भवति सोपि गौरुच्यते नि० अ०२ खं०६ जार आभगः जार इव भगमादित्योत्र जार उच्यते रात्रेर्जरयिता नि० अ० ३ खं० १६ एष एवेंद्रो य एष तपति श० कां० १ अ० ६॥

॥ भाषार्थ ॥

इसको इस प्रकार से बिगाड़ी है। इंद्र जो देव लोक का राजा था वह गोतम ऋषि की अहल्या जो स्त्री उससे व्यभिचार करता था। इस बात

को गोतम ने जब जाना तब इन्द्र को शाप दिया कि तेरे शरीर में हजार भग हों और अहल्या को शाप दिया कि तूं शिला हो जा इस शाप का मोक्षण राम के पांव की धूल के स्पर्श से होगा सो इसी कथा को विद्याहीन लोगों ने इस प्रकार से विगाड़ी है । यह ऐसी कथा है कि इंद्र नाम है सूर्य का तथा चन्द्रमा का नाम गोतम है और रात्रि का नाम अहल्या है क्योंकि अहर् नाम है दिन का सो लय होता है जिसमें इस कारण से रात्रि का नाम अहल्या है जैसे स्त्री और पुरुष का जोड़ा होता है इसी प्रकार रात्रि और चन्द्रमा का रूपकाऽलंकार किया है इस रात्रि का जार सूर्य है क्योंकि जिस देश में रात्रि है उसमें सूर्य का सिरणा रूप जो वीर्य है वहां उसके गिरने से रात्रि अन्तर्धान अर्थात् निवृत्त हो जाती है इससे सूर्य का नाम अहल्या का जार है रात्रि की उमर को सूर्य ही विगाड़ता है अर्थात् उसकी हानि कर्त्ता है इससे सूर्य्य रात्रि का जार कहाता है और चंद्रमा अपनी स्त्री जो रात्रि है उससे सब संसार को आनंद करता है इस असंत श्रेष्ठ कथा को लोगों ने विगाड़ के अन्यथाही लिखी है ॥२॥ तथा तीसरी यह कथा है जो इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध की कहानी है ॥

तद्यथा ॥ अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ॥ वाश्रा इव धेनवः स्यंदमाना अंजः समुद्रमवजग्मुरापः । ऋग्वेद अष्टक १ अध्याय २ वर्ग ३७ । इत्यादय एतद्विषया वेदेषु बहवो मंत्राः संति । अद्रिरित्यादिषु मेघस्य त्रिंशन्नामसु । वराहः । अहिः । वृत्रः । असुर इति चत्वारि नामानि यास्कमुनिकृतनिघंटोः प्रथमाध्याये लिखितानि ॥ इन्द्रशत्रुरिन्द्रोस्य शमयिता वा शातयिता वा तस्मादिन्द्रशत्रुस्तत्को वृत्रो मेघ इति नैरुक्तास्त्वाष्ट्रोऽसुर इत्यैतिहासिकाः । वृत्रं जघ्निवानपवार तद्वृत्रो वृणोतेर्वावर्त्ततेर्वा वर्द्धतेर्वा यदवृणोत्तद्वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते निरुक्त० अध्याय० २ खंड १७ ।

वृत्रोहवाइद७ सर्वं वृत्वाशिश्ये यदिदमंतरेण द्यावा पृथिवी स यदिद७ सर्वं वृत्वा शिश्येतस्माद्वृत्रो नाम ॥४॥ तमिन्द्रो

जघान स हतः पूतिः सर्वत एवापोभि सुस्राव सर्वत इव ह्ययं समुद्रस्तस्मादु हैका आपो बीभत्सां चक्रिरे ता उपर्युपर्यति पुप्रुविरे तइमेदर्भास्ता हैता अनापूयिता आपोस्तिवा इतरासुसंसृष्टमिवयदेना वृत्रः पूतिरभिप्रास्रवत्तदेवासामेताभ्यां पवित्राभ्यामपहन्त्यथमेध्याभिरेवाद्भिः प्रोक्षति तस्माद्वा एताभ्यामुत्पुनाति शतपथ कांड०१अ०१तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः अग्निः पृथिवीस्थानो वायुर्वेन्द्रोवान्तरिक्षस्थानः सूर्योद्युस्थानइति निरु०अ०७खंड५

॥ भावार्थ ॥

(अहन्नहिं०) यह ऋग्वेद का मंत्र है इत्यादि इस विद्या के निरूपण करने वाले और भी बहुत मंत्र हैं इन्द्र नाम है सूर्य का सो निघंटु में लिखे हैं। इन दोनों का रूपकालंकार से युद्ध की नाईं वर्णन किया है जब त्वष्टा जो सूर्य है अर्थात् मेघ और सब चीजों का काटने वाला है वह जब मेघ को अपनी किरण रूप वज्र से काटता है तब वह वृत्रासुर जो मेघ है सो पर्वत और भूमि का आश्रय लेता है पुनः उसका शरीर रूप जो जल है सो समुद्र को प्राप्त होता है पुनरपि सूर्य की किरण से उसके शरीर का खंड २ होता है सो वायु के साथ आकाश में ऊपर चढ़ता है फिर भी बादल रूप सेना को जोड़ के सूर्य की सेना जो किरण रूप है उसको रोकता है पुनः सूर्य भी अपनी किरण रूप सेना से उसका हनन कर्त्ता है पुनः वह मेघ पृथिवी में गिर पड़ता है पुनरपि उठ के इसी प्रकार युद्ध कर्त्ता है (इन्द्र शत्रु) इन्द्र शत्रु है जिसका ऐसा जो मेघ उसका छेदन करने वाला सूर्य ही है इससे सूर्य का नाम त्वष्टा है उसके पुत्र की नाईं मेघ है क्योंकि मेघ की उत्पत्ति सूर्य के निमित्त से ही होती है इससे मेघ का नाम त्वष्टा है और असुर भी नाम है। वृत्र नाम मेघ का इस कारण से है कि सूर्य के प्रकाश को आवरण कर्त्ता है और सूर्य से ही वृद्धि को प्राप्त होता है यही मेघ में वृत्रपना है सो जब आकाश में वृद्धि को प्राप्त होता है तब सब को आवरण करके आकाश और पृथिवी के बीच में सोता है पुनः जब सूर्य इस मेघ को हनन करके पृथिवी में गिरा देता है तब पृथिवी को अच्छादित करके पृथिवी में सोता

है पुनरपि उसी प्रकार ऊपर को चढ़ता है इसी प्रकार से सूर्य और मेघ के रूपकालंकार से परमोत्तम जो मेघ विद्या है उसका इस कथा से परमेश्वर ने इसके अनुसार मुनि और ऋषियों ने भी उपदेश किया है इसको यथावत् नहीं जान के बालकों की नाईं विपरीत कथा मनुष्यों ने रच लीं हैं ऐसी अनेक कथा रूपकादि अलंकारों से वेदादि सत्यशास्त्रों में लिखी हैं उन में से के एक कथा वेद की भूमिका में सज्जनों को जनाने के लिये लिखी है तथा वेदों की उत्पत्ति किस प्रकार से है वेद नित्य हैं वा अनित्य हैं वेद ईश्वर ने बनाये हैं वा अन्य ने वेदों में सब विद्या हैं वा नहीं इत्यादि बहुत कथा भूमिका में लिखी हैं जब भूमिका छपके सज्जनों के दृष्टि गोचर होगी तब वेद शास्त्र का महत्त्व जो बड़ापन तथा सत्यपना भी सब मनुष्यों को यथावत् विदित हो जायगा सो भूमिका के श्लोकन्यून से न्यून संस्कृत और आर्यभाषा के मिल के आठ ८ हजार हुए हैं इसमें सब विषय विस्तार पूर्वक लिखे हैं सो इस को छपवा के हम लोग प्रसिद्ध किया चाहते हैं इसलिये सब सज्जन लोगों को यही विज्ञापन है कि अत्यंत उत्साह से पूर्वोक्त दो प्रकार का सहाय इस उत्तम काम में यथावत् देवें ॥ ओं नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय ॥ यही परमेश्वर स्वकृपा से सब का सहायक हो ॥

(१) (१३८)

श्रीयुत सम्पादक देशहितैषी महाशय मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर समीपेषु ॥

प्रिय सम्पादकवर ! जो मनुष्य स्वार्थ बुद्धि छोड़ परमार्थ करने में प्रवृत्त नहीं होता उसका हृदय पूर्ण शुद्ध होना असंभव है, चाहै वह बहुत युक्ति और गूढता अपनी कपटता को प्रसिद्ध करने में कैसा ही यत्नवान क्यों न हो उसका कपट कभी न कभी प्रकाशित हो ही जाता है। प्रत्यक्ष दृष्टांत देख लो कि लाला जगन्नाथदास मुन्शी इन्द्रमणिजी के शिष्य की बनाई हुई [आर्य्य प्रश्नोत्तरी] की समालोचना करने से (बहुत से विषय उसमें सत्य और परोपकारक दीख पड़ते हैं परन्तु बहुधा विषय उसमें ऐसे भी हैं कि जिनके सुनने वा पाठ करने वालों का भ्रमजाल में फंस वेदादि सत्यशास्त्रों से विरुद्ध होना सम्भव है यह विरुद्ध विषय केवल लाला जगन्नाथदास ही के अभिप्राय से नहीं किन्तु मुन्शी इन्द्रमणिजी भी उन दोषयुक्त विषयों के अनुयायी प्रतीत होते हैं) अस्तु जो हो मुझको सत्य २ परीक्षा इस ग्रंथ की कर के दोषों का प्रकाश करना अवश्यनीय है। कारण सज्जन

लोग गुण ग्रहण कर दोषों को छोड़ दें। इतना ही नहीं किन्तु जैसे विष युक्त उत्तमान्न का बुद्धिमानों को त्याग करना अवश्य होता है इसी प्रकार आर्य्य लोगों के लिये यह [आर्य्य प्रश्नोत्तरी] ग्रन्थ गुणों के साथ दोष दायक होने से श्रेष्ट पुरुषों को त्याग के योग्य है। अब इसका कुछ थोड़ा सा नमूना संक्षेप से दिखलाता हूं॥

[आर्य्य प्रश्नोत्तरी पृष्ठ २। प्रश्नोत्तर ७] परमात्मा ने सृष्टि की आदि में श्री ब्रह्माजी के हृदय में वेदों का प्रकाश किया उन से ऋषि मुनि अस्मदादिकों को प्राप्त हुये।

[समीक्षा] यह बात प्रमाण करने योग्य नहीं क्योंकि (अग्नेर्वै ऋग्वेदोजायते वायोर्यजुर्वेदः सूर्य्यात्साम वेदः) शतपथ ब्राह्मण वचन "अग्नि वायुरविभ्यस्तुत्रयम्ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थमृग्यजुः साम लक्षणम्" मनुस्मृति का वचन—अब देखिये अग्नि आदि महर्षियों से ऋग्वेदादि का प्रकाश हुआ इत्यादि ब्राह्मण वचनों के अनुसार मनुजी महाराज कहते हैं कि ब्रह्माजी ने अग्न्यादि महर्षियों के द्वारा वेदों की प्राप्ति की अतएव "योवै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं योवै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै" इस श्वेताश्वतरोपनिषद् के वचनार्थ की संगति शतपथ और मनुजी के वचन से अविरुद्ध होनी चाहिये किन्तु परमात्मा ने चारों महर्षियों के द्वारा श्री ब्रह्माजी को चार वेदों की प्राप्ति कराई और अब भी जो कोई चार वेदों को पढ़ता है वही यज्ञ में ब्रह्मासन को प्राप्त और उसी का नाम ब्रह्मा भी होता है। यदि मुन्शी इन्द्रमणिजी और उनके शिष्य लाला जगन्नाथदास वेद और तदनुयायी ब्राह्मणादि ग्रन्थों को पढ़े होते तो ऐसे भारी भ्रम में पड़ ऐसे २ अन्यथा भाषण वा लेख क्यों करते? इनको उचित है कि अपना हठ छोड़ सत्य का ग्रहण अवश्य करें।

[पृष्ठ ३। प्रश्नोत्तर १६] जीव वास्तविक अनन्त हैं इस कारण ईश्वर के ज्ञान में भी अनन्त ही हैं॥

[समीक्षा] जब जीव देश काल वस्तु परिछिन्न अर्थात भिन्न २ हैं उनको अनंत कहना मानों एक अज्ञानी का दृष्टांत बनना है। अनन्त तो क्या परन्तु परमेश्वर के ज्ञान में असंख्य भी नहीं हो सकते परमेश्वर के समीप तो सब जीव वस्तुतः अतीव अल्प हैं जीवों को तो क्या परन्तु प्रति

जीव के अनेक कर्मों के भी अंत और संख्या को परमेश्वर यथावत् जानता है जो ऐसा न होता तो वह परब्रह्म जीव और उनके कर्मों का जैसा २ जिस २ जीव ने कर्म कीया है उन २ का फल न दे सके जब कोई इनसे प्रश्न करे कि एक २ जीव अनन्त हैं वा सब मिलि के? जो एक २ अनंत हैं तो "यआत्मनितिष्ठन्" इत्यादि ब्राह्मण वचन अर्थात् जो परमात्मा व्याप्य जीवों में व्यापक हो रहा है और ऐसा ही लाला जगन्नाथदास ने "पृष्ठ ५। प्रश्नोत्तर ३२" के उत्तर में लिखा है कि "जीवेश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बंध और "पृष्ठ ४ प्र० २१" "में जीव को अणु माना है"। जीव शरीर को छोड़ दूसरे शरीर में जाता और शरीर के मध्य में रहता है इस लिये अनंत वा असंख्य ईश्वर के ज्ञान में नहीं किन्तु जीवों के ज्ञान में जीव असंख्य है। जिन लाला जगन्नाथदास वा मुन्शी इन्द्रमणिजी को अपने ग्रंथस्थ पूर्वापर विरुद्ध विषयों का ज्ञान भी नहीं है तो आगे क्या आशा होती है इसी से इनके सब प्रपंचों का उत्तर समझ लेना शिष्टों को योग्य है॥

[पृष्ठ ४ प्र० २४] "जीव के गुण वास्तव में विभु हैं परन्तु बद्धावस्था में अविद्या से आच्छादित होने से परिछिन्न हैं मुक्तावस्था में विभु हो जाते हैं"॥

[समीक्षा] विभु गुण उसी के होते हैं जो द्रव्य भी विभु हो और जिसको अणु मानते हैं क्या उसके गुण विभु कभी हो सकते हैं? क्योंकि गुणों का आधार द्रव्य होता है। भला कोई कह सकता है कि परिछिन्न द्रव्य में विभु गुण हों क्या गुणी एक देशी और गुण विभु हो सकते हैं? और गुणी को छोड़ केवल गुण पृथक् भी रह सकता है? नहीं! नहीं!! और जो (पृष्ठ ४। प्रश्नोत्तर २१) में जीव को अणु माना है वह भी ठीक नहीं क्योंकि एक अणु में भी जीव रह सकता है अर्थात् एक अणु में अनेक जीव रह सकते हैं। देखो अणु काच वा पृथिवी आदि के मध्य में से पार नहीं जा सक्ता और जीव जा सकता है इसीलिये जीव अणु से भी सूक्ष्म है और इसके गुण भी विभु नहीं हां मुक्तावस्था में जिस ओर उसका ज्ञान होगा उस दूरस्थ पदार्थ को भी अपने ज्ञान से जान लेता है नहीं तो "युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम्" इस न्याय शास्त्र के सूत्र का अर्थ ही नहीं घट सकेगा जो एक क्षण में एक पदार्थ को जाने अनेक को नहीं उसी को

मन कहते हैं वही मन मुक्तावस्था में भी रह जाता है पुनः उसी मन रूप साधन से विभु गुण वाला जीव कैसे हो सकता है ॥

[पृष्ठ ४ प्रश्न २५] "जीव परतन्त्र है" ॥

[समीक्षा] जीव किस के आधीन है ? जो कहो कि परमेश्वर के तो जो कुछ जीव कर्म कर्ता है वह स्वतंत्रता से वा ईश्वराधीनता से ? जो ईश्वराधीनता से करता है तो जीव को पाप पुण्य का फल न होना चाहिये किन्तु ईश्वर को होना चाहिये जैसे सेनाध्यक्ष वा राजा की आज्ञा से कोई किसी को मारे वह अपराधी नहीं होता अथवा किसी के मारने में लकड़ी तलवारादि शस्त्र अपराधी और न दंडनीय होते हैं वैसे ही जीवों को भी दंड न होना चाहिये किन्तु पाप पुण्य का फल सुख दुख ईश्वर भोगे। इस लिये जीव अपने कर्म करने में सर्वदा स्वतंत्र और पाप का फल दुःख भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतंत्र रह जाते हैं। जैसे चोर चोरी करने में स्वतंत्र और राजदण्ड भोगने में परतंत्र हो जाते हैं इसी प्रकार जीवों को भी जानो ॥

[पृष्ठ ४। प्रश्नोत्तर २८] "मुक्त जीव कर्म्मवश होकर कभी फिर संसार में नहीं आते ईश्वरेच्छानुकूल अपनी इच्छा से केवल धर्म रक्षा करने को आते हैं" ॥

[समीक्षा] पाठक गण ! विचारिये यह अविद्या का प्रताप नहीं है तो और क्या है ? जो कहते हैं कि जीव संसार में कभी नहीं आते और ईश्वरेच्छानुकूल अपनी इच्छा से केवल धर्म रक्षा करने को आते भी हैं। धन्य ! भला इस पूर्वापर विरुद्धता को गुरु और चेलेने तनिक भी न समझा, विचारणीय है कि जिस का ज्ञान सामर्थ्य कर्म अन्त वाले हैं उस का फल अनंत कैसे हो सक्ता है ? और जो मुक्ति में से जीव संसार में न आवें तो संसार का उच्छेद अर्थात् नाश ही होजाय। और मुक्ति के स्थान में भीड़ भड़क्का हरद्वार के मेले के समान होजाय। और ईश्वर भी अंत वाले गुण कर्म्म का फल अनंत देवे तो वह न्यायरहित होजाय। और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाले जीव अनंत आनंद को भोग भी नहीं सक्ते। फिर यह बात वेद तथा शास्त्र से विरुद्ध भी है देखो "अग्नेर्नूनं कतमस्या-

मृतानांमनामहे चारु देवस्य नाम। सनो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरंच दृशेयं मातरंच" ऋग्वेद वचन-अर्थ-हम उसी सुन्दर निष्पाप परमात्मा का नाम जानते हैं और जो स्व-प्रकाश स्वरूप जगदीश्वर प्राप्तमोक्ष जीवों को पुनः अवधि पर संसार में माता पिता के दर्शन कराता है अर्थात् मुक्ति सुख को भुगा के पुनः संसार में जन्म देता है॥ इसी प्रकार सांख्य शास्त्र में भी लिखा है "नात्यन्तोच्छेदः" इत्यादि वचनों से यही सिद्ध होता है कि अत्यंत जन्म मरण का छेदन (न) किसी का हुआ और न होगा किन्तु समय पर पुनः जन्म लेता है इत्यादि प्रमाणों और युक्तियों से मुक्त जीव भी पुनरावृत्ति में आते हैं॥

[पृष्ठ ४। प्रश्नोत्तर ३०] "एक वृक्ष में एकही जीव होता है न अनेक"॥

[समीक्षा] जो एक वृक्ष में एक जीव होता तो प्रत्येक जीव (वृक्ष) में पृथक् २ जीव कहां से आते और किसी वृक्ष की डाली काट कर लगाने से जम जाता है उस में जीव कहां से आया इस लिये एक वृक्ष में अनेक जीव होते हैं॥

[पृष्ठ ५। प्रश्नोत्तर ३५] अनेक पूर्व जन्मों के कर्म जो ईश्वर के ज्ञान में स्थित हैं वे संचित कहलाते हैं॥

[समीक्षा] क्या जीव का कर्म्म जीव के ज्ञान में संचित नहीं होता? जो ऐसा न हो तो कर्म्मों के योग से पवित्रता और अपवित्रता जीव में न होवे इस लिये जो २ अध्ययनादि कर्म जीव करते हैं उनका संचय जीव ही में होता है ईश्वर में नहीं किन्तु ईश्वर तो केवल उन के कर्म्मों का ज्ञाता है और फल प्रदाता है॥

[पृष्ठ १२-प्रश्नोत्तर ७७] "केवल देवता और शिष्ट पुरुषों के नाम पर जन्माष्टम्यादिव्रत हैं सो ईश्वरातिरिक्त किसी देवता की उपासना कर्तव्य नहीं"॥

[समीक्षा] क्या शिष्ट पुरुषों से भिन्न भी कोई देवता है? विना पृथिव्यादि के तेतीस और वेदमंत्र तथा माता पिता आचार्य्य अतिथि

आदि के जिन का वेदों ने पूजन अर्थात् सम्यक् सत्कार करना कहा है। क्या यह भी मनुष्यों को कर्तव्य नहीं ॥

[पृष्ठ १३–प्रश्नोत्तर ८२] "जो कुछ ईश्वर ने नियत किया है उस में न्यूनाधिक्य करने वाला कोई नहीं। जो बात जिस प्राणी के लिये जिस काल में जिस प्रकार से ईश्वर ने नियत की है उस से विरुद्ध कभी नहीं होती" ॥

[समीक्षा] क्या ब्रह्मचर्य्य और योगाभ्यासादि उत्तम कर्मों से आयु का अधिक होना और कुपथ्य से वा व्यभिचारादि से न्यून नहीं होता? जब ईश्वर का नियत किया हुआ ही होता है तो जीव के कर्मों की अपेक्षा कुछ भी नहीं रह सकती और जो अपेक्षा है तो केवल ईश्वर ने नियत नहीं किया किन्तु दोनों निमित्तों से होती है। जो हमारा क्रियमाण स्वतंत्र न हो तो हम उन्नति को प्राप्त कभी नहीं हो सकते इसीलिये हम कर्म करने में स्वतंत्र और ईश्वर जीवों के कर्मों को यथायोग्य जानकर कर्म्मानुसार शुभाऽशुभ फल देने में स्वतंत्र है। ऐसा माने विना ईश्वर में वे ही दोष आ जावेंगे जो २५वें प्रश्नोत्तर की समीक्षा में लिख आये हैं ॥

[पृष्ठ १३–प्रश्नोत्तर ८४] "स्वर्ग संसारांतर्गत है वा लोकान्तर ("उत्तर" स्वर्ग लोकविशेष है वहां क्षुधा पिपासा बुढापा आदि दुःख नहीं है" ॥

[समीक्षा] क्या लोकान्तर का नाम संसार है नहीं क्या विना मुक्ति के वा प्रलय अथवा स्थूल शरीर के क्षुधादि की निवृत्ति हो सकती है ऐसे विशेष स्वर्ग लोक को गुरु शिष्य देख आये होंगे। जो पूर्वमीमांसा को देखा होता तो ऐसी अन्यथा बातें क्यों लिखते। देखिये "सएव स्वर्गः स्यात्सर्वान्प्रत्यविशिष्टत्वात्" पूर्वमीमांसा का वचन।-जो सर्वत्र अविशेष अर्थात् सुख विशेष की प्राप्ति का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष की प्राप्ति का नाम नरक लिखा है सब जीवों को सब संसार में प्राप्त होता है किसी विशेष लोकान्तर ही में नहीं और जहां शरीर धारण श्वास प्रश्वास भोग वृद्धि क्षय आदि होते हैं वहां क्षुधा पिपासा और बुड्ढापन आदि क्यों नहीं? यह सब अविद्या की बात है। ध्यान दीजिये वेद का कोष क्या कहता है (स्वः) साधारण नाम में है निघं० १।४ "स्वः सुखंगच्छति

यस्मिन्सस्वर्गः" जिसमें सुख की प्राप्ति हो वही स्वर्ग कहाता है परन्तु "गौणमुख्ययोर्मध्ये मुख्ये कार्य्ये सम्प्रत्ययः" यह व्याकरण महाभाष्यकार का वचन है। इस से यह सिद्ध होता है कि निर्मल धर्म्माऽनुष्ठान जन्य सत्य विद्यादि साधनों से सिद्ध आत्मिय और शारीरिक सुख विशेष है उसी प्रधान सुख की प्राप्ति का नाम स्वर्ग है ॥

[पृष्ठ १४–प्रश्नोत्तर ६१] सम्पूर्ण जीव वास्तव में ईश्वर के दास हैं इस कारण मनुष्यों के नाम में ईश्वर वाच्य शब्द में दास शब्द का प्रयोग करना अत्युत्तम है" ॥

[समीक्षा] यह शास्त्रीय व्यवहार से सर्वथा बाहर है किन्तु केवल कपोलकल्पना मात्र ही है क्योंकि "शर्म्मवद्ब्राह्मणस्यस्याद्राज्ञो रक्षा समन्वितम्। वैश्यस्य गुप्ति संयुक्तं शूद्रस्यतुजुगुप्सितम्" मनु०–जैसे ब्राह्मण का नाम विष्णु शर्म्मा, क्षत्रिय का विष्णु वर्म्मा, वैश्य का विष्णु गुप्त और शूद्र का विष्णुदास इस प्रकार नाम रखना चाहिये। जो कोई द्विज शूद्र बनना चाहे तो अपना नाम दास शब्दान्त धर ले और जो शास्त्रोक्त विधि छोड मनोसुख चले उस को क्या कहना ॥

[पृष्ठ १६–प्रश्नोत्तर ६७] "परलोक और धर्मार्थ के फल तथा ईश्वर को न मानने वाले को नास्तिक कहते हैं ॥

[समीक्षा] इस में केवल इतनी ही न्यूनता है कि "नास्तिको वेद निन्दकः" जो लाला जगन्नाथ दास और मुन्शी इन्द्रमणि जी ने मनुस्मृति पढ़ी वा अच्छे प्रकार से देखी भी होती तो वेद निन्दक का नाम नास्तिक क्यों न लिखते जिस से सब कुछ अर्थ आ जाता और लक्षण भी दृष्टि पड़ता ॥

(पृष्ठ १६–प्रश्नोत्तर ६८) "हिन्दू" शब्द संस्कृत भाषा का नहीं है पारसी भाषा में वास्तविक अर्थ "हिन्दुस्तान" के रहने वाले का है और (काला, लुटेरा, गुलाम)" यह सांकेतिकार्थ हैं–"

(समीक्षा) वह क्या ! जब संस्कृत भाषा का नहीं है तो इसका वास्तविक अर्थ कभी नहीं हो सक्ता, वास्तविक अर्थ इस देश वालों का नाम (आर्य्य) और इस देश का नाम "आर्य्यावर्त्त है" इस सत्यार्थ को

छोड़ असत्यार्थ की कल्पना करनी मुझ को तो अविद्या और हठ की लीला दृष्टि पड़ती है ॥ जब "अर्बी", की (लुग़ात) नामक पुस्तक में लिखा है कि लुटेरे आदि का नाम हिन्दू है तो उस भाषा में वास्तविक नाम क्यों नहीं ? केवल सांकेतकार्थ क्यों ? अर्थात् जो कोई आर्य्य होकर अपने हिन्दू नाम होने में आग्रह करे उन्हीं का नाम काला, लुटेरा, गुलामादि का रहो आर्य्यों का नहीं ॥

[पृष्ठ १६–प्रश्नोत्तर १००] पहिले कहने वाला "परमात्मा जयति" कहे और उत्तर देने वाला "जयति परत्मा" कहे ॥

[समीक्षा] यह कल्पना वेदादि शास्त्रों से विरुद्ध होने के कारण सर्वथा मिथ्या ही जान पड़ती है क्योंकि "नमस्ते रुद्र मन्यवे०नमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायचनमः" इत्यादि यजुर्वेद वचन "परमर्षिभ्यो नमः" "नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायोः" इत्यादि उपनिषद् वचन, इनसे निश्चित यही सिद्ध होता है कि परस्पर सत्कारार्थ (नमस्ते) शब्द से व्यवहार करने में वेदादि सत्य शास्त्रों का प्रमाण है और परस्पर अर्थ भी यथावत् घट जाता है जैसे (ते) तुभ्यं वा तव अर्थात् जिसको मान्य देता है उसका वाची है और(नमः)शब्द नम्रार्थ वाचक होने से नमस्कार कर्ता का बोधक है मैं तुम कूं नमता हूं अर्थात् (ते) आप वा तेरा मान्य वा सत्कार करता हूं, इसमें नमस्कर्त्ता और नमस्करणीय दोनों का परस्पर प्रसंग प्रकाशित होता है और यही अभिप्राय दोनों का है कि दोनों प्रसन्न रहें और जो असंबद्ध प्रलाप अर्थात् तीसरे परमेश्वर का प्रसंग लाना है सो व्यर्थ ही है जैसे "आम्रान्पृष्टः कोविदारा-नाचष्टे" किसी ने किसी से पूछा कि आम्र के वृक्ष कौन से हैं उसने उसे उत्तर दिया कि यह कचनार के वृक्ष हैं, क्या ऐसी ही यह बात नहीं हैं ? किसी ने ईश्वर का प्रश्न पूछा ही नहीं और न कोई परस्पर सत्कार के व्य-वहार में ईश्वर का प्रसंग है और कह देना कि (परमात्मा सारे उत्कर्षों के साथ विराजमान है)यह वचन हठयुक्तका नहीं है तो और क्या है?हां जहां परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना उपदेश और व्याख्या करने का प्रसंग हो तो वहां परमात्मा के नाम का उच्चारण करना सब को उचित है जैसा राम राम, जय गोपाल, जयश्रीकृष्णादि शब्दों से परस्पर व्यवहार करना यह हठ दुराग्रह से सम्प्रदाई लोगों ने वेदादि शास्त्र विरुद्ध मनमानी व्यर्थ कल्पना

की है उसी प्रकार से मुन्शी इन्द्रमणिजी वा ला० जगन्नाथदासजी की युक्ति और प्रमाण से शून्य यह कल्पना दृष्टि पड़ती है ॥ इन विषयों में मुन्शी इन्द्रमणिजी और स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का सम्वाद भी पूर्व समय में हो चुका है परन्तु मुन्शीजी कब मानते हैं। विशेष क्या लिखें शोक है कि लाला जगन्नाथदास की करतूतों को विचार अब मुझको यह कहना पड़ा कि इन दोनों महात्माओं के प्रतिज्ञा से विरुद्ध करना आदि अन्यथा व्यवहारों को जो कोई सज्जन पुरुष जानना चाहे वे आर्य्य समाज मेरठ लाला राम सरन दासादि भद्र पुरुषों से पूछ देखें कि एक अन्य मार्गियों के विवाद विषय की शांति कारक व्यवहार प्रसंग में इन्होंने कैसा २ विपरीत व्यवहार किया जिस को सब जानकार आर्य्य लोग जानते हैं सत्य यह बात चली आती है कि सब पापों का पाप लोभ है" जो कोई उसी तृष्णारूपी नदी प्रवाह में बहे जाते हैं उनमें पवित्र वेदोक्त आर्य्य धर्म्म की स्थिरता होनी कठिन है अब जो मुन्शी इन्द्रमणिजी और उन के चेले लाला जगन्नाथदास, स्वामीजी और भद्र आर्य्यों की व्यर्थ निन्दा करें तो इसमें क्या आश्चर्य है ? पाठक गण ! ठीक भी तो है जब जैसे में वैसा मिले फिर क्या न्यूनता रहै जैसे दावानल अग्नि का सहायक वायु होता है वैसे ही इन को श्री मुन्शी बख़तावरसिंहजी सहायकारी बन बैठे अब तो जितनी निन्दा आर्य्य लोगों और स्वामीजी की करें उतनी ही थोड़ी। चलो भाई यह भी अच्छी मंडली जुड़ी, महाशयो ! जब तक तुम्हारा पेट न भरे तब तक निन्दा करने में कसर न रखना क्योंकि यह अवसर अच्छा मिला है। जैसे किसी कवि ने यह श्लोक कहा है सो बहुत ठीक है॥ "निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरण मस्तु युगान्तरे वान्यायय्यात्पथः प्रविचलंति पदंन धीराः ॥ १ ॥ चाहें कोई अपने मतलब की नीति में चतुर निन्दा करे वा स्तुति करै चाहै लक्ष्मी प्राप्त हो वा चली जाओ चाहे मरण आज ही हो वा वर्षान्तरों में परन्तु जो धीर पुरुष महाशय महात्मा आप्तजन हैं वे धर्म्म मार्ग से एक पाद भी विरुद्ध अर्थात् अधर्म मार्ग में नहीं चलते हैं ॥ १ ॥ सभ्य गणो ! यह तो आर्य्यों की शभेच्छा का कारण है परन्तु जो प्रथम उत्तमाचरण करके पश्चात् गड़ बड़ा जायं वे ही तो आर्य्यावर्त के हानि कारक होते हैं। परन्तु यह सदा ध्यान में रखना

चाहिये कि "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" जो इस सनातन वेदोक्त सत्य धर्म का आचरण करते हैं उस में अनेक विघ्न क्यों न होंय तदपि इस सत्य मार्ग से चलायमान न होना चाहिये॥ सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर परमात्मा अपनी कृपा दृष्टि से इन विघ्नों को हम से और हम को इन से सर्वदा दूर रख कर हम से आर्यावर्त की उन्नति कराने में सहायक रहै॥ इस थोड़े से लेख से सज्जन पुरुष बहुत सा जान लेंगे॥ अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु॥

एक उचित वक्ता

नियोग का मसव्विदा।

मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती निहायत अदब से उस एज़ाज़ और ताज़ीम कानूने शादी के तसलीम करने के बाद कि जिसका तसलीम करना हम सब पर फ़र्ज़ है, निस्वत एक्ट नम्बर १५ सन् ५६ ई० (कानून दरबारा शादी बेवगान की, कि जिसकी यह मन्शा है कि हिन्दु बेवा के विवाह करने के बारे किसी तरह से कानूनन् मुमानिअत न हो और जो औलाद कि दूसरे विवाह से पैदा हो वह हरामी मुतसव्वर न होकर तकरीबन् मालिक हो सके, और जो बाज़ हिन्दू अपने ईमा से इस रसमोरिवाज विवाह सानी को खिलाफ़ रसमो रिवाज साबक़ के जारी करना मनजूर करें, उनको अदम तामील क़ानूनी की पाबन्दी से जिससे वह शाकी है रिहा किया जावे) अपनी आदिल और क़दरदान गवर्नमेण्ट के हजूर में चन्द बवाइस ज़रूरी गुज़ारिश करना चाहता हूं और चूंकि रिआया की फ़रयादरसी गवर्नमेण्ट से और गवर्नमेण्ट की दादबख्शी रिआया पर एक ऐसा फर्ज़ लाज़मी मलजूम है कि जैसा मां बाप का बच्चों पर, या बच्चों का अपने मां बाप पर। लिहाज़ा बावजूद मलहूज़ रखने तमामतर एज़ाज़ और आदाब क़ानून मज़कूर हसबज़ैल इलतमास करता हूं, कि अगरचे एक्ट मज़कूर का असली मनशा सरीह इन्साफ और मसलिहत आमा कायिम करना और हिन्दुओं के असली और इन्साफी कानून को बमुकाबला जायिज़ रस्मो रिवाज बे बुनियाद के तरजीह देता है और उस की तासीर से बेवगान हनूद को झूंठे रस्मोरिवाज की पाबन्दी से बचा कर

आदिल गवर्नमैण्ट ने क़ानूनी हक़ उन का वहाल फ़रमाया है। लिहाज़ा इस हक़पसन्दी गवर्नमैण्ट आलीजाह का तहे दिल से शुकरिया अदा किया जाता है मगर अफ़सोस है, कि उन हिन्दु साहिबों ने जो मुहर्रक उसकारे खैर के हुए थे इस मसला के मतालब और तासीरात और क्वाइद की तौज़ीह मुग़ालत खाया। इस लिये ऐक्ट मज़कूर के नफ़ाद से ग़रज मक़सूद हासिल न हो सकी और न पूरे पूरे क्वाइद उस की बाबत मिनज़ब्त हुए बल्कि एक ग़लत लफ़्ज़ विवाह बेवा हनूद के मुस्तअगल होने से कि ग़ालिबन् सहीह नाम यानी नियोग से मुराद है। बाज़ असली मक़ासद और उस की तमामतर तासीर बिलअक्स हो गये। यह ही वजह है कि कि ऐक्ट मज़कूर के नफ़ाज़ को अरसा बईद २५ साल गुज़र गया, मगर जो कवाइद कि उस के जरिये से हासिल होने चाहिये वह हनूज़ मुतरत्तब नहीं हुए और न आइन्दा को किसी ऐसे फाइदा मक़सूदा के पैदा होने की उमीद है कि जिस का पैदा होना वक्त नफ़ाज ऐक्ट मज़कूर तहरीक कुनन्दा हिन्दू साहिबों के ज़ेहन नशीन और गवर्नमैण्ट को ख्याल दिलाया गया होगा। पस निहायत अदब से गुज़ारिश है कि ऐक्ट मज़कूर की तौज़ीह बएतबार इलफ़ाज़ और उस की तरमीम बाएतबाद अदालत व ऐहकाम ऐसे तौर पर फरमाई जावे कि जिस से उस का मन्शा इस बारे में हिन्दुओं के असली क़ानून के मवाफ़िक़ हो जावे।

मख़्फ़ी न रहे कि आर्य्य लोगों (जिन को उरफन ग़ल्त नाम हिन्दु के लफ़्ज़ से बोलते हैं) के असली क़ानून वेद वग़ैरा में तीन आला फिरक़ों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य में औरत और नीज़ मरद के वास्ते दूसरा विवाह करने की कतई मुमानियत है।

सिरफ एक सूरत है कि जिस में दूसरा विवाह करने की औरत और मरद दोनों के वास्ते इजाज़त हैं और वह यह है कि जब कोई औरत ऐसे वक्त बेवा हो जाय कि उस की हमबिस्तरी की नौबत अपने शौहर के न साथ पहुंची हो, या किसी मरद की ज़ौजह ऐसे वक्त मर गई हो कि वह उस अपनी ज़ौजह के साथ हमबिस्तर न हुआ हो तो ऐसा मरद या औरत हरसे आया फिरक़ों मज़कूरा बाला में दूसरी शादी कर सकता है,

मगर ऐसी औरत या ऐसे मरद के साथ (यानी जैसे कि सूरत हो) जो बज़रिया नियोग पैदा हुआ या हुई हो ।

अलबत्ता वे औलादी की ख्वाहिशें रफा करने के वास्ते आर्य्य लोगों की सच्ची किताब वेद वग़ैरा में नियोग करने की इजाज़त मरद और औरत दोनों के वास्ते पाई जाती है । ताकि औलाद मज़कूर अपने वालदैन के वास्ते फैज़ दुनयावी का ज़रिया हो और मालिक मुतरद्दका होकर खानदान का नामोनिशान कायिम रख सके और जिस रसम नियोग से जो खास २ हालात में महदूद किया गया है, मसलन् जब कि कोई मरद बग़ैर छोड़े किसी औलाद के मर जावे या नामरदी से कोई नाकाबलियत ऐसी लाहक़ हो कि जिसकी वजह से वह औलाद पैदा करने के लाइक न रहा हो, तो बेवा बाइजाज़त विरसाए शौहर या शौहर या खुद अपनी मरज़ी से ऐसे शख्स के साथ जो उसकी शौहरी निसबत की रू से भाई के सिलसला क़राबत में नियोग कर सकती है और उस नियोग के जरिया से अपने शौहरी खानदान को फवाइद मज़कूरावाला पहुंचाने के लिये दो और हिलकायिम पैदा कर लेने की मजाज़ होती है मसलन् चित्रांगद विचित्रवीर्य्य के मरने पर व्यासजी उन के बड़े भाई ने उनकी औरतों से नियोग करके दो लड़के पैदा किये । एक धृतराष्ट्र, दूसरा पाण्डु । और एक कनीज़क से एक लड़का पैदा किया । जिस का नाम विदुर था । इसी तरह पाण्डु की हय्यात में उनकी ज़ौजा कुन्ती ने पांच पुत्र उसी रिशता नियोग के ज़रिया से बवजह नाकाबल होने अपने शौहर के पैदा किये ।

इस रिशता नियोग की वजह से मुसम्मात या मर्द या उस औलाद पैदा शुदः का कोई तअल्लुक या फर्ज़ या हक़तौरीस या हकनान या नुफकः खानदाने शौहरी से मुनक़तअ या ज़ायल और नियोग करने वाले शख्स के खानदान में पैदा वा कायम नहीं होता है । बल्कि औलाद मज़कूर का तअल्लुक मिस्ल औलाद सहीह उलनस्ब के बेवा और उसके खानदान शौहरी से या अगर मर्द ने अपने वास्ते नियोग किया हो तो औलाद का तअल्लुक उस मर्द और उसके खानदान से इस तरह पर होता है कि गोया वह उस शौहर या मनकूहः ज़ौजः से (व जैसी कि सूरत हो) पैदा हुई ।

लेकिन अगर बवजेह मिन उलबजह मुअय्यनः धर्मशास्त्र ज़ौजीन का तअल्लुक़ ज़नाशवी क़तअ हो जाव और बाद क़तअ हो जाने तअल्लुक मज़कूर के ज़ौज या ज़ौजः अपने वास्ते नियोग करे तो उस औलाद का जो ऐसी हालत में पैदा हो सिर्फ नियोग करने वाले शख्स की ज़ात से उस तेदाद तक कि जो आइन्दः बयान की जावेगी तअल्लुक होता है, नियोग करने वाले शख्स को अपने वास्ते दो औलाद तक जो हिलक़ायिमः हों और जिस के साथ नियोग किया जावे दो औलाद तक उस के वास्ते भी, अगर नाम्बरवः की ख्वाहिश और ज़रूरत हो, पैदा करने का इख़्तयार वेद वग़ैरः आर्य्य लोगों की मुक़द्दस किताबों में पाया जाता है। और जो ज्यादः औलाद इस तेदाद से उसी नियोग के ज़रिया से की जावे, वह हरामी ख्याल की जाती है।

एक औरत या एक मर्द को जब कि वह अपने वास्ते भी दो औलाद तक पैदा करना चाहता हो, चार नियोग तक के करने की इजाज़त है। और अगर नाम्बरवः अपने वास्ते औलाद के पैदा करने की ज़रूरत समझे तो पांच नियोग कर सकता है। इस का असली मन्शा बहुत साफ़ है कि एक ख़ानदान के नाम को क़ायिम रखने के वास्ते दो औलाद और एक शख्स के जरीयअ से दस औलाद तक पैदा करना जाइज है। और जो औलाद जिस खान्नदान के वास्ते इस रिश्ता नियोग के जरियअ से पैदा हो वह उसी ख़ानदान में मिस्ल सही उलनस्ब औलाद के दाखल और शामल समझी जाती है।

चूंकि इस कारेख़ैर के मुहर्रक हिन्दु साहिबों ने इस मसअला के असूल और तासीरात के समझने और समझाने में ग़लती की थी, बल्कि विवाह बेवा हनूद का गलत लफ्ज इस्तेमाल करके उस की तासीर को बिल्कुल मुन्कलब कर दिया था। लिहाजा वह तमाम फवायद जो इस के जरिया से हासिल होने चाहिये थे, बिल्कुल रुक गये।

अब मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती धर्म्मशास्त्र की सही और असली मक़ासद दर-बाब जिस मसअला की आदिल और क़दरदान गवर्नमैण्ट की आखरी राय पर ज़ाहर करके एक मसव्विदा बाबत इजराय रस्म मज़कूर गवर्नमैण्ट के हजूर में निहायत अदब से पेश करता हूं और उम्मीद रखता

हूं कि मसव्विदा मज़कूर की मनजूरी से इस आर्य्यवर्त देश की रिआया को फ़ैज़ बख्शी और गवर्नमैएट की हक़पसन्दी बज़रिया इमदाद अदालतहाए दीवानी ममालिक बृटिश इण्डिया बमुआम्लात नफ़ाज़ हक़ तौरीस वगैरः उन क्वाइद और शराइत के मवाफ़िक जो मसव्विदा में अर्ज़ की गई हैं ज़ाहिर फरमाई जावे।

चूंकि इस ऐक्ट के ज़रिया से कोई जदीद मसअला कानून का पैदा नहीं होता बल्कि सिर्फ़ धर्म्म शास्त्र के कदीम मसअला की तजदीद होती है, लिहाज़ा कव्वी उम्मीद है कि जो फ़व्वाइद एक्ट १५ सन् ५६ के नक़ाद से ख्याल किये गए। होंगे, मगर पैदा नहीं हुए, वह बल्कि उस से ज्यादः कायम और मुकम्मिल हो जावेंगे। मस्लन्

(१) बेवगान का फ़स्क फजूर से बचना और जुरायम शदीद मिस्ल इस्क़ात हमल और क़त्ल वगैरः का मसदूद हो जाना।

(२) मसकीन बेवगान के दिल से बेऔलादी की हालत में मुफारकते शौहर का ग़म सहव जाना।

(३) बे औलादी के रञ्ज और तकालीफ से मसकीन बेवगान का निजात पा जाना।

(४) किसी आर्य्य यानी हिन्दू की मौरूसी या मकसोयः तर्क का बवजः न होने औलाद के तलफ न होना।

(५) किसी फैज दुनयावी से बवजः बे औलादी किसी आर्य्य का महरूम न होना।

(६) इन्सानों की अफ़ज़ायश और उसके आम नतायज नेक का ज़हूर। व कस अलहज़ा।

फैज़ बख्शी गवर्नमैएट के तरहम अङ्गेज मादलत से दाद ख्वाही की उम्मीद करके दस्तबस्ता गुज़ारिश करता हूं कि मेरे पेश किये हुए मसव्विदा पर ग़ौर फरमा कर इसकी मनजूरी से मतला फरमाया जावे।*

---

* शेष आगे छपेगा।

सम्पादक की अन्य पुस्तकें ।

(१) ऋग्मन्त्र व्याख्या ।

ऋग्वेद के अननुवादित भाग के अनेक मन्त्रों का ऋषि दयानन्द कृत भाष्य का क्रमवार संग्रह, भाग प्रथम । वेद मन्त्रों की अद्भुत व्याख्या संयुत, ऋषि के वेद भाष्य के अनेक सूक्ष्म तत्वों को समझाने वाली पुस्तक । स्वाध्याय के लिये उपयोगी ग्रन्थ । आर्य्यसमाज में वेद का व्याख्यान अभी कैसा हुआ है, यह इस पुस्तक की भूमिका के पाठ से ज्ञात हो जायगा । सुन्दर कागज और छपाई पृ० सं० ५२ मूल्य ।-)

(२) ऋषि दयानन्द स्वरचित जीवन चरित्र ।

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने कर्नल आल्काट के अनुरोध पर अपना कुछ जीवन चरित्र आप उन्हें लिखकर दिया था । वह कई स्थलों पर छपा मिलता था । जीवनचरित्र लेखक प्रायः उसे अपने ही शब्दों में दे देते हैं । ऐतिहासिक दृष्टि से यह अच्छी बात नहीं । इसी विचार और ऋषि के प्रत्येक शब्द के शुद्ध रखने के विचार से इस पुस्तक का सम्पादन हुआ है । प्रत्येक आर्य्य को ऋषि जीवन उनके अपने शब्दों में पढ़ना चाहिये । मोटा अक्षर । छपाई कागज अत्युत्तम । पृ० सं० ६० मूल्य केवल ।)

(३) ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, भाग प्रथम ।

इस ग्रन्थ में ऋषि की ओर से लिखे वा लिखाये गये ८२ पत्र और विज्ञापन छपे हैं । उनके अपने हाथ के लिखे एक पत्र की प्रतिकृति भी दी गई है । इन पत्रों के पाठ से जहां अनेक शिक्षाएं मिलती हैं वहां आर्य्यसमाज का प्रारम्भिक इतिहास और इसके अनेक सिद्धान्त भी खुल जाते हैं । प्रत्येक समाज के पुस्तकालय में रखने योग्य ग्रन्थ है । मूल्य ॥)

५) पांच रुपये की पुस्तकें एक साथ लेने वालों को १०) प्रति सैकड़ा और १०) रु० की पुस्तकें एक साथ लेने वालों को १५) प्रति सैकड़ा कमीशन दिया जायगा । किसी आर्य्य दुकानदार से मंगायें या

चन्दन बाड़ी, चंगड़ मुहल्ला लाहौर ।

के पते पर लिखें ।

पञ्जाब आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, चौक मत्ती लाहौर ।